Annual Subscription Rs. 100/-

ओ३म्

27 th March 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ऐतिहासिक दस्तावेज

शहीद भगत सिंह का अंतिम पत्र.. अपने साथियों के नाम

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है।

मिट गया जब मिटने वाला फिर सलाम आयो तो क्या?
दिल की बरबादी के बाद उनका पयाम आया तो क्या?

साथियों,

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए। मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन मैं एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पायंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्थानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊँचा उठा दिया है। इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज़ नहीं हो सकता।

आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया, तो वो जाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक चिह्न मद्धिम पड़ जाएगा या संभवतः मिट ही जाए, लेकिन दिलेराना ढंग हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्थानी माताएँ अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरज़ू किया करेंगी और देश की आज़ादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तदाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद याी तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी। हाँ एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं। उनका हज़ारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र भारत में जिंदा रह सकता, तब शायद इन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाय मेरे मन में कभी कोई लालच फाँसी से बचे रहने का नहीं आया। मुझसे अधिक सौभाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे खुद पर बहुत गर्व है। अब तो थोड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है। कामना है कि यह और नज़दीक हो जाए।

- आपका साथी
भगत सिंह

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २२ अंक : ०६
दयानन्दाब्द : १८९
सृष्टि संवत् : १९७२९४९११३
वि.सं. : २०६९
नंदन नाम संवत् फागुन कृष्ण पक्ष
२७-३-२०१३

सम्पादक
विठ्ठलराव आर्य
वार्षिक मूल्य रू. 100

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24750363
फ्याक्सः 040-24557946, 24756983

Email :
aaryajeevan_aaryajivan@yahoo.co.in.
arpratinidhisabha@yahoo.co.in.
acharyavithal@gmail.com,
aryavithal@yahoo.co.in.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

***Editor*:** Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.100/-**

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह की लेखनी से

काकोरी के वीरों का परिचय और उनके फाँसी के दृश्य

(काकोरी काण्ड के सभी वीर आकर्षक, वलिष्ठ नवयुवक थे। इस काण्ड की चारों और बड़ी चर्चा हुई। काकोरी के वीरों के प्रति देश की जनता का मस्तक श्रद्धा से झुक गया।)

(उसी समय क्रांतिकारी भगतसिंह ने इनके विषय में 'किरती' नामक पत्रिका म ेंदो लेख 'विद्रोही' के नाम से निकाले-१. काकोरी के वीरों से परिचय (मई १९२७), (२) काकोरी के शहीदों की फाँसी के हालात (जनवरी १९२७)। ये दोनों ही ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, अतः उन्हें यहाँ के पाठकों के लिए यथावत् प्रस्तुत किया जाता है।- सम्पादक)

पहले 'किरती' (पंजाबी पत्रिका) में काकोरी से संबंधित कुछ लिखा जा चुका है। आज हम काकोरी षड्यंत्र और वीरों के संबंध में कुछ लिखेंगे, जिन्हें उस सम्बन्ध में कड़ी सज़ाएं मिली हैं।

९ अगस्त, १९२५ को एक छोटे से स्टेशन काकोरी में एक पैसेंजर ट्रेन चली। यह स्टेशन लखनऊ से आठ मील की दूरी पर है। ट्रेन मील-डेढ़ मील चली होगी, कि सेकेंड क्लास में बैठे हुए तीन नौजवानों ने गाड़ी रोक ली और दूसरो ने मिलकर गाड़ी में जा रहा सरकारी खज़ाना लूट लिया। उन्होंने पहले ही ज़ोर से आवाज़ देकर सभी यात्रियों को समझा दिया कि वे डरें नहीं, क्यों कि उनका उद्देश्य यात्रियों को तंग करना नहीं, सिर्फ सरकारी खज़ाना लूटने का है। खैर, वे गोलियाँ चलाते रहे । वह (कोई यात्री) आदमी गाड़ी से उतर पड़ा और गोली लग जाने से मर गया।

सरकारी अधिकारी हार्टन सी. आई. इसकी जाँच में लगा। उसे पहले से ही यकीन हो गया था कि यह डाका क्रांतिकारी जत्थे का काम है। उसने सभी संदिग्ध व्यक्तियों की छान-बीन शुरू कर दी। इतने में क्रांतिकारी जत्थे की राज्य परिषद की एक बैठक मेरठ में होनी तय हुई। सरकार को इसका पता चल गया। वहाँ खूब छानबीन की गई। फिर सितंबर के अंत में हार्टन ने गिरफ्तारियों के वारंट जारी किये और २६ सितंबर को बहुत तलाशियाँ ली गई और बहुत से व्यक्ति पकड़ लिये गये। कुछ नहीं पकड़े गये। उनमें से एक राजेंद्र लाहिड़ी दक्षिणेश्वर बम केस में पकड़े गये और वहीं उन्हें दस बरस की कैद हो गई और श्री अश्फाक उल्ला और शचिंद्र वक्शी वाद में पकड़े गये, जिन पर अलग मुकदमा चला। ये हैं १) राम प्रसाद, २) राजेंद्र लाहिड़ी, ३) रोशन सिंह ४) अश्फाक उल्ला खान। इनमें से राजेद्र लाहिड़ी एम.ए. कक्षा का छात्र था। वह बनारस हिंदू विश्व विद्यालय में पढ़ता था। वह १९२५ में पकड़ा गया। इसकी अपील व रहम की दरखास्त की गई थी। लेकिन वे सब नामंजूर हो गई। इस बहादुर भाई ने निम्न पत्र अपने बड़े भाई को लिखा है।-

मेरे प्रिय भाई,

आज मुझे सूपरिंटटेंडेंट ने बताया कि वायसराय ने मेरी रहम की दरख्सात नामंजूर कर दी है। जेल के नियमों के अनुसार मुझे एक सप्ताह के भीतर फाँसी पर चढ़ाया जाएगा। तुम्हें मेरे लिए एफसोस नहीं करना चाहिए। क्योंकि मैं अपना पुराना शरीर छोड़कर नया जन्म धारण कर रहा हूँ। आपको यहाँ आकर मुलाकात करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि कुछ दिन पहले ही आप मुलाकात कर चुके हो। जब मैं लखनऊ में था, तो बहन ने दो बार मुलाकात की थी। सभी को मेरी ओर से प्रणाम और लड़कों को प्यार।

आपका प्रिय
राजेंद्रनाथ लाहिड़ी

...सरदार भगत सिंह

क्षमा के महादानी स्वामी दयानंद

- खुशहाल चन्द्र आर्य

विश्व में अनेकों महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने अपने मारने वाले को क्षमा कर दिया। किसी ने भारी नुकसान करने पर भी क्षमा कर दिया। किसी ने चोट मारने वाले को क्षमा कर दिया, पर स्वामी दयानंद की क्षमा इन सभी क्षमा करने वालों से अलग ही स्थान या कीमत रखती है। उनकी दानशीलता सर्वोपरी है। वैसे तो महर्षि ने अपने जीवन में एक नहीं, दो नहीं, दस नहीं, अनेक स्थानों पर अपनी दानशीलता का परिचय दिया है। यहाँ हम केवल चार-पाँच ही उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जो इस भाँति हैं।

राव कर्णसिंह को क्षमा कर दिया :- मिती जेष्ठ बदी २३ सं १९२५ तदनुसार सन १८६८ में स्वामीजी कर्णवास में अपनी पुरातन कुटिया में अलग ही ठहरे। उसी समय गंगा स्नान का मेला था। सहस्त्रों नर-नारी एकत्रित हुए थे। उसी समय राव कर्णसिंह भी स्नानार्थ आए हुए थे। जब उसने सुना कि स्वामी दयानंद यहाँ आए हुए हैं और वे हमारे अवतारों की और गंगाजी की निन्दा करते हैं, तो वे अपने नौकरों सहित स्वामीजी की कुटिया में आ गए। यह सायं का समय था। स्वामीजी उपदेश कर रहे थे। श्रोतागण एकाग्र चित्त उपदेशामृत पान करने में निमग्न थे। उसी समय कर्णसिंह ने आकर स्वामीजी से कहा कि मैंने सुना है कि तुम अवतारों की, गंगाजी की निंदा करते हो। स्मरण रखो, यदि मेरे सामने निंदा की, तो मैं बुरी तरह पेश आऊँगा। स्वामीजी ने कहा, मैं निंदा नहीं करता हूँ, किन्तु जो वस्तु जैसी है, उसे वैसी ही कहता हूँ। तब राव बोला गंगा गगेति इत्यादि श्लोकों के नाम कीर्तन, दर्शन, स्पर्शन आदि से पाप नाश होता है। स्वामीजी ने कहा- ये श्लोक साधारण लोगों की कपोल कल्पित है। महात्म्य सब गप्प है। पाप का नाश और मोक्ष प्राप्ति वेदानुकूल आचरण से होगी, अन्यथा नहीं। यह सुनकर उसने स्वामीजी पर कुवचनों की झड़ी लगा दी और आपे से बाहर हो गए और स्वामीजी के ऊपर तलवार का वार करने के लिए आगे बढे। वे तलवार चलाना ही चाहते थे, कि स्वामीजी ने उसके हाथ से तलवार छीन ली और भूमि पर टेककर तलावर के दो टुकड़े कर डाले। स्वामीजी ने कहा, 'मैं संन्यासी हूँ। तुम्हारे किसी भी अत्याचार से तुम्हारा अनिष्ट चिंतन नहीं करूँगा। जाओ, ईश्वर तुम्हें सन्मति प्रदान करें। स्वामीजी ने तलवार के दोनों खण्ड दूर फेंककर राव महाशय को बिदा कर दिया।

एक पहलवान को सबक सिखाया :- यह सन १८६७ की सोरों की घटना है। स्वामीजी एक दिन उपदेश दे रहे थे। बीसियों मनुष्य दत्तचित्त होकर श्रवण कर रहे थे। उसी समय वहाँ एक हट्टा-कट्टा दण्डपेल पहलवान आ गया। एक मोटा सोटा कन्धे पर रखे सभा-सरोवर को चीरता-फाड़ता सीधा स्वामीजी की ओर बढ़ा। उसका चेहरा मारे क्रोध के तमतमा रहा था। आँखें रक्तवर्ण थीं, भौंहें तन रही थीं और माथे पर त्योरी पड़ी हुई थी। होटों को चबाता और दाँतों को पीसता हुआ वह बोला, 'अरे साधु, तू ठाकुर पूजा का खण्डन करता है और श्री गंगा मैया की निन्दा करता है, देवताओं के विरुद्ध बोलता है? झटपट बता, तेरे किस अंग पर मेरा सोटा मारकर तेरी समाप्ति कर दूँ? ये वचन सुनकर एक बार तो सारी सभा विचलित हो गई। किन्तु स्वामीजी की गंभीरता में रत्तीभर भी न्यूनता नहीं आयी। उन्होंने प्रशांत भाव से मुस्कुराते हुए कहा कि भद्र, यदि तेरे विचार में मेरा धर्म-प्रचार करना कोई अपराध है, तो इस अपराध का प्रेरक मेरा मस्तिष्क ही है। यही मुझे खण्डन की बातें सुझाता है। सो तू यदि अपराधी को दण्ड देना चाहता है, तो मेरे सिर पर सोटा मार, इसी को दण्डित कर।' इन वाक्यों के साथ ही स्वामीजी ने अपने नेत्रों की ज्योति उसकी आँखों में डालकर उसे देखा। जैसे बिजली कौंधकर रह जाती है, धधकता हुआ अंगारा जलधारा-पात से शांत हो जाता है, वैसे ही वह बलिष्ठ व्यक्ति ठण्डा हो गया, श्री चरणों में गिर पड़ा अनवरित अश्रुमोचन करता हुआ अपना अपराध क्षमा कराने की याचना करने लगा। स्वामीजी नेउसे आश्वासन दिया और कहा, तुमने कोई अपराध किया ही नहीं। मुझे मारते, तो कोई बात थी, अब यूँ ही क्यों रो रहे हो? जाओ, ईश्वर तुम्हें सत्यमार्ग प्रदान करें।

बच्चों को लड्डु खिलाए :- स्वामीजी लाहोर से मिती आषाढ़ बदी ९ सं. १९३४ तदनुसार सन १८१७ में अमृतसर पहुँचे। यहाँ वे मियाँ मुहम्मद खाँ की कोठी में ठहरे। उनके पधारने से अमृतसर के वासियों में धर्म-प्रेम उमड़ पड़ा। शत-शत और सहस्त्र पुरुष श्री दर्शन को आने लगे। स्वामीजी ने लोगों के उत्साह को देखकर उसी दिन सायंकाल व्याख्यान देना आरंभ कर दिया। श्री के उपदेशों को सब नर-नारी श्रद्धापूर्वक सुनते थे। यहाँ स्वामीजी ने प्रतिमा पूजन, अवतारवाद और मृतक श्राद्ध आदि मिथ्यामूलक मन्तव्यों का घोर खण्डन किया, जिससे पंडितों में हलचल मच गई। वहीं एक पाठशाला के अध्यापक पंडित ने अपने छोटे-छोटे बच्चों से कहा, आज कथा में हम सब चलेंगे। तुम अपनी-अपनी झोलियों में ईटों के गेड़े भर लो। वहाँ जिस समय मैं संकेत करूँ, तुम तत्काल कथा कहने वाले पर इन्हें फेंकने लग जाना। इसके बदले में कल तुमको लड्डू दिये जाएंगे। वे अबोध बालक अपने अध्यापक के बहकाने में आ गये और झोलियों में ईंटों के टुकड़े लिये व्याख्यान स्थल पर आ पहुँचे। व्याख्यान रात आठ बजे समाप्त हुआ करता था। थोड़ा सा अंधेरा होते ही अध्यापक का संकेत पाकर वे अनजान लड़के स्वामीजी पर कंकड बरसाने लगे। एक बार तो सारी सभा चलायमान हो गई। परंतु स्वामीजीने सभा को तुरंत शांत कर दिया। पुलिस के कर्मचारियों ने अपने चातुर्य से उन बालकों में से कुछेक को पकड़ लिया और व्याख्यान की समाप्ति पर स्वामीजी के सामने उपस्थित किया।

पुलिस के पंजे में पड़े हुए वे बालक चिल्लाते और फूट-फूटकर रोते थे। स्वामीजी ने उनका ढाढस बंधाया और ईट मारने का कारण पूछा। तब वे हिचकियाँ लेते हुए बोले हमको अध्यापकजी ने लड्डुओं का लोभ देकर ऐसा

(शेष पृष्ठ १८पर)

महर्षि के शब्दों में वेदों की महत्ता

- *खुशहाल चन्द्र आर्य*

स्वामीजी चितौड़ से चलकर मिती द्वितीय श्रवण बदी २३ सं १९३९ तदनुसार सन १८८२ में उदयपुर पधारे। वहाँ नौलखा महल में विराजमान हुए। उदयपुर में पधारने के एक माह बाद मौलवी अब्दुर्रहमान ने स्वामीजी से वेदों संबंधी कुछ प्रश्नोत्तर किये, जो इस भाँति है-

प्रश्न - ऐसा कौनसा धर्म है, जो जिसकी धर्म पुस्तक मेंसब मनुष्यों की बोल-चाल और प्राकृत नियमों को सिद्ध करने में प्रवल हो।

उत्तर- मत संबंधी सारी पुस्तकें हठधर्मी से भरी पड़ी है। इसलिए उनमें विश्वास के योग्य एक भी पुस्तक नहीं है। मेरी सम्मति में जो पुस्तक ज्ञान संवंधी है, वही सत्य है। उसमें पक्षपात नहीं हो सकता। ऐसी ही पुस्तक का सृष्टिक्रम के अनुकूल होना संभव है। मेरे आज तक के अन्वेपण में वेद ही ऐसी पुस्तक है। वह किसी एक देश की भापा में नहीं है। वह ज्ञानमय है और उसकी भापा भाषा भी ज्ञान की भापा है। इसलिए वेद पर ही निश्चय करना चाहिए।

प्रश्न- २ क्या वेद, मत की पुस्तक नहीं है?

उत्तर - नहीं, वह ज्ञान की पुस्तक है।

प्रश्न ३- मत का आप क्या करते हैं?

उत्तर- पक्षपात युक्त मन्तव्यों के समुदाय को मत कहते हैं।

प्रश्न ४- हमारे पूछने के अभिप्राय का उत्तर आपने वेद बताया है। सो क्या वेद में वे सव पुण्य-पाये जाते हैं?

उत्तर- हाँ पुण्य पाये जाते हैं।

प्रश्न ४ - आपने कहा कि वेद किसी एक देश की भाषा में नहीं हैं। जो भाषा किसी एक देश की नहीं, वह सब भाषाओं पर प्रबल कैसे हो सकती है?

उत्तर- जो देश विशेष की भाषा होती है, वह व्यापक नहीं हो सकती।

प्रश्न ६- जब वह भाषा किसी एक देश की भाषा नहीं है, तो वह सब पर कैसे प्रबल हो सकती है?

उत्तर- जैसे आकाश किसी एक स्थान का नहीं है, परन्तु सर्वत्र व्यापक है, ऐसे ही वेदों की भाषा देश-भाषा न होने से सव भाषाओं में व्यापक है।

प्रश्न ७ - यहभापा किसकी है?

उत्तर - ज्ञान की।

प्रश्न ८ - इसका वोलनेवाला कौन है?

उत्तर- इसका वोलने वाला सर्वदेशी परव्रह्म है।

प्रश्न ९- इसका सुनने वाला कौन है?

उत्तर- इसे सुनने वाले अग्नि आदि चार ऋषि, सृष्टि आदि हुए हैं। उन्होंने परमात्मा से सुनकर सव मनुष्यों को सुनाया है।

प्रश्न १०- ईश्वर ने यह भाषा उन्हीं को क्यों सुनायी?

उत्तर- वे चारों सर्वोत्तम थे। ईश्वर ही ने उनको तत्काल भाषा का भी ज्ञान करा दिया था।

प्रश्न ११- आप इसमें क्या युक्ति देते हैं?

उत्तर - कारण के विना कार्य नहीं होता। यही युक्ति है और व्रह्मादि ऋपियों की साक्षी है।

प्रश्न १२ - भूमंडल के सारे मनुष्य क्या एक ही कुल के हैं।

उत्तर- भिन्न-भिन्न कुल के हैं। आदि सृष्टि में उतने ही जीव मनुष्य शरीर धारण करते हैं, जितने गर्भ की सृष्टि में शरीर धारण करने के योग्य होते हैं। वे जीव असंख्य होते हैं।

प्रश्न १३ - इस पर कोई युक्ति दीजिए।

उत्तर- अब भी सब अनेक माँ-बाप की सन्तान हैं।

प्रश्न १४- जो आकृतियाँ मनुष्यों की हैं, उनके तन क्या एक ही प्रकार के बने थे?

उत्तर - आदि में मनुष्यों के अंग और लंवाई -चौड़ाई आदि का भेद अवश्य था।

प्रश्न १५- सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई?

उत्तर- सृष्टि को उत्पन्न हुए एक एरब ९६ करोड़ और कई लाख वर्ष वीत गये हैं।

प्रश्न १६ - क्या उपादान कारण अनादि है? आप कितने पदार्थों को अनादि मानते हैं?

उत्तर - उपादान कारण अनादि है। जीवात्मा, परमात्मा और प्रकृति ये तीन पदार्थ अनादि हैं। इनका परस्पर संयोग-वियोग कर्म और कर्मों का फल-भोग प्रवाह से अनादि है।

प्रश्न १८- जो वस्तु हमारी बुद्धि की सीमा से बाहर है, हम उसे अनादि कैसे मान लें?

उत्तर- जो वस्तुएं नहीं हैं, वे कभी भी नहीं हो सकती। जो हैं, वे पहले भी थी और आगे भी बनी रहेंगी।

प्रश्न १९- वेद यदि ईश्वर का बनाया होता, तो सूर्यादि की भाँति सारे संसार में सब मनुष्यों को इससे लाभ पहुँचता।

उत्तर- वेद पवित्र, सूर्यादि पदार्थों की तरह ही सबको लाभ पहुँचाता है। सारे धर्मों के ग्रंथों और विद्या की पुस्तकों का कारण ही वेद हैं। यह सवसे पहले हैं, इसलिए जितने शुभ विचार और ज्ञान की वार्ताएं दूसरे ग्रंथों में पाई जाती हैं, वे सब वेद से ली गई हैं. हानिकारक कथाएं उन ग्रंथों के कर्ताओं की अपनी मन-गढंत है। वेद में किसी का खण्डन-मण्डन नहीं पाया जाता। इसलिए वह पक्षपात रहित हैं। जैसे सृष्टि विद्या वाले सूर्यादि से अधिक लाभ लेते हैं, वैसे ही वेदका अनुशीलन करने वाले वेदसे भी अधिक उपकार प्राप्त करते हैं।

इस लेख से महर्षि दयानंद की वेदों के प्रति आस्था एवं ज्ञान का परिचय होता है। इसलिए महर्पि ने आर्य समाज के १० नियमों में तीसरा नियम वेद सव सत्य वधिाओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ पुरुषों) का परम धर्म बनाया है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है, जिसे ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों, जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा थे, उनसे चार वेद जिनके नाम ऋवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद है, क्रमशः कहलवाए। इसमें वताया गया है कि मनुष्य को अपना जीवन सार्थक बनाने के लिए क्या काम करने चाहिए और क्या नहीं। मनुष्य वेदानुसार चलनेसे ही अपना तथा दूसरों का जीवन सुखी व आनंदमय वना सकता है और अंत में मृत्यु के बाद मोक्ष प्राप्त कर सकता है। जहाँ एक लंबी अवधि तक ईश्वर के सानिध्य में रहते हुए परम आनंद को प्राप्त करता है।

विजय के आधार

संघर्ष मनुष्य के जीवन का अनिवार्य साथी है। उस संघर्ष में सफल होकर जीवित रहने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य व्यष्टि रूप से और समष्टि रूप से भी बलवान बने। संघर्ष में बलवान की ही जीत हो सकती है। निर्बल और असमर्थ की नहीं। कभी-कभी ऊपर से भगवान दिखने वाला व्यक्ति, ऊपर से निर्बल दिखने वाले व्यक्ति से परास्त होता दिखाई देता है। परंतु यदि गहराई में जाकर खोज करें, तो हमें मालूम होगा कि जो व्यक्ति ऊपर से बलवान दिखाई देता था, वह वस्तुतः अंदर से जर्जरित हो चुका था। कोई आदमी मोटा हो, तो उसका यह अर्थ नहीं कि वह बलवान भी हो। कभी-कभी तो मोटाई ही उसकी निर्बलता बन जाती है क्योंकि वह आसानी से हाथ-पाँव नहीं हिला सकता। ऐसे मोटे आदमी को किसी हल्के आदमी से पछाड़ खाते हुए देखकर अवविवेकी लोग कभी-कवीं इस परणिाम पर पहुँच जाते हैं कि निर्बल को भगवान बल देते हैं। असल बात यह होती है कि जिसे हम भगवान समझ रहे हैं, वह वस्तुतः वोदा हो चुका होता है। मनुष्य में केवल शरीर की स्थूलता और पट्ठों की मोटाई को ही बल नहीं कहते। जीतने वाले बल में कई प्रकार के बल सममिलित होते हैं। जिन सबके समझे विना जीवन संग्राम के सिद्धांत को भली-भाँति समझा नहीं जा सकता। इस कारण अव हम कुछ विस्तार से हम यह वतलाने की चेष्टा करेंगे कि जीवन संग्राम में विजयी होने के लिए किस प्रकार की योग्यता आवश्यक है। पारिभाषिक शव्दों में इस प्रश्न को इस प्रकार रख सकते हैं कि योग्यतम किसे कहते हैं?

जीतने की प्रबल इच्छा

जीवन संग्राम में जीतने की सबसे पहली शर्त यह है कि जीवन की इच्छा प्रबल हो। हम इस सारे विवेचन में जीवन संग्राम की इकाई जाति या राष्ट्र को मानेंगे। यह समझ लेना चाहिए कि संग्राम में जीतने के ऊसूल व्यक्ति और जाति पर, थोडे से उलट-फेर से लगभग एक जैसे ही लागू होते हैं। भेद केवल इतना है कि जहाँ जाति के अवयव व्यक्ति हैं, वहाँ व्यक्ति के अवयव उसके अपने शरीर, मन और आत्मा हैं। यहाँ जिन सिद्धांतों का हम जाति के सम्वंध में प्रयोग करेंगे, पाठकों को उनका प्रयोग व्यक्ति के बारे में स्वयं अवस्थानुसार कर लेना चाहिए। जाति को इकाई मानकर हम कह सकते हैं कि जातियों को अवश्यंभावी संघर्ष में वही जाति जीतने और जीवित रकने की आशा रख सकती है, जिसमें प्रबल जीवनेच्छा विद्यमान हो।

यहाँ शायद पूछा जाये, कि जीवन की इच्छा किसमें नहीं है? हरेक प्राणी जीना और जीतना चाहता है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि प्रथम तो यही ठीक नहीं कि हरेक प्राणी जीना ही चाहता है। स्वाभाविक तो यही है कि मनुष्य जीवन की इच्छा रखें, परंतु कभी-कभी रोगी मनुष्य में मरने की इच्छा भी पैदा हो जाती है। आत्महत्या का यही मूल कारण है। आत्महत्या तो जीवित न रहने की इच्छा का उग्र उदाहरण है। ऐसे मानसिक रोगी भी बहुत संख्या में मिलेंगे। जो इतने शक्तिहीन हो जाते हैं कि उनकी आत्महत्या तक करने की इच्छा नष्ट हो जाती है और वह अपने से उदासीन होकर प्राकृतिक शक्ति द्वारा नष्ट होना ही उचित समझते हैं। ऊपर कहे हुए दोनों प्रकार के मानसिक रोगी धर्म, और तत्वज्ञान से अपने रोग की पुष्टि करते हैं। जर्मनी के फिलासाफर शौपनहर का मत था कि मनुष्य का निस्तार आत्महत्या से ही हो सकता है। इधर वेदांतियों का सिद्धांत है कि कुछ न कुछ कहके मनुष्य ब्रह्मस्वरूप बन सकता है। देखने में यह दोनों विचार भिन्न मालूम होते हैं। परंतु इनका मूल कारण एक ही है। जो लोग जीना नहीं चाहते, वह दो तरह से अपने जीवन को नष्ट करते हैं, या तो अपने हाथसे अपनी हत्या करके, अथवा निरन्तर उपेक्षा द्वारा नैसर्गकि सक्तियों से अपना नाश कराके। दोनों जगह प्रेरक कारण यही है कि मनुष्य जीना नहीं चाहता। जो जीना नहीं चाहता, वह जीतकर क्या करेगा? ऐसे व्यक्तियों, या जातियों के लिए जीवन संग्राम में विजयी होने की कोई आशा नहीं है। जिसे जीवन ही नहीं चाहिए, वह जीवन के लिए लड़ेगा क्यों?

जो जीना नहीं चाहते, वह तो हारेंगे और मरेंगे ही परंतु जो केवल जीना चाहते हैं, औरर जीवन की प्रबल इच्छा नहीं रखते, उनकी जीवन संग्राम में विजयी होने की संभावना बहुत ही कम रहती है। जीतने के लिए जीवन की प्रबल अभिलाषा चाहिए। जो जाति केवल जीना चाहती है- फिर वह जीवन चाहे कितना ही जलील, दासता पूर्ण और अपमानित हो, उसे विजय की क्या जरूरत? और जिसे विजय की ज़रूरत नहीं, उसके पास जीवन का आगमन ही क्यों होगा? जीवन की इच्छा उसी राष्ट्र के हृदय में पैदा होगी, जो जीवन की प्रबल अभिलाषा रखता हो।

संघ की भावना

हम इस लेखमाला में देख चुके हैं कि व्यक्तियों में जीवन संग्राम के सिद्धांत काम तो करते हैं, परंतु जिस समाज के वे अंग हों, उस समाज की आत्मरक्षण की भावना व्यक्तियों की परस्पर प्रतिस्पर्धा को बहुत कम कर देती है। इस कारण प्रायः जीवन संग्राम का सिद्धांत अपना पूरा काम नहीं करता, परंतु समुदायों में ऐसा नहीं। अभी वह दिन नहीं आया, जब मनुष्यों की सामाजिक सत्ता की इकाई सारा मनुष्य समाज हो। अभी तक मनुष्य जाति बहुत से समुदायों में बंटी हुई है, जिनमें परस्पर प्रतिस्पर्धा का सिद्धांत पूरी घनता और तीव्रता के साथ काम करता है। इसका कारण यह कहना युक्ति संगत है कि जीवन संग्राम की असली इकाई वर्तमान युग में मनुष्य समुदाय है।

मनुष्यों का परस्पर समुदाय भी कई कारणों से बनता है, और वह कारण समय की गति के साथ बदलते रहते हैं। किसी समय केवल पारिवारिक बन्धनों से समुदाय वना करते थे। कुरु के वंशज कौरव और पण्डु के वंशज पाण्डव, यदु के वंशज यादव और रघु के वंशज राघव कहलाते हैं। राजपूतों में अब तक भी चौहान सिसोदिया, तोमर, आदि वंशों की भावना का आधार पारिवारिक है। ऐसे स्थानों पर संघ का आधार वंश होता है। इस कारण जीवन संग्राम की इकाई वंश को ही माना जाता है।

समय की प्रगति के साथ संघ का आधार भी वदल जाता है। केवल वंश को छोटी मात्रा समझा जाने लगता है। और धर्म के आधार

पर समुदाय बनने लगते हैं। भारतवर्ष में धार्मिक आधार पर संघ भावना मुसलमानों के सफल आक्रमण के पश्चात पैदा हुई। परंतु यूरोप और मध्य एशिया में वह भावना बहुत पहले उत्पन्न हो चुकी थी। क्रूसेड की लड़ाइयों में ईसाई और मुसलमान बिना किसी राष्ट्रीय भेद के लड़ते रहे। ईसाई पक्ष में प्रायः यूरोप के सभी बड़े-बड़े देशों के प्रतिनिधि और नेता लड़ा करते थे। धर्म के आधार पर समुदाय बनाकर जो लड़ाइयाँ लड़ी गईं, उनमें यूरोप में रोमन कैथोलिक और प्रेटेस्टैण्ट ईसाइयों की परस्पर लड़ाइयाँ और एशिया में मुसलमान योद्धाओं की मुस्लिम विभिन्न जातियों से लड़ाइयाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। भारत वर्ष में धार्मिक आधार पर बने हुए समुदायों में युद्ध की बुनियाद मुसलमानों के आक्रमण के साथ पड़ी। इससे पूर्व यहां के युद्ध प्रायः राजनीतिक होते थे, और उनका आधार वांशिक होता था। यहाँ तक कि पूर्व समय के यवन, हूण,सीथियन आदि जातियों के आक्रमण केवल राजनीतिक थे उनका आधार आर्थिक था। परंतु वर्तमान काल में राजनीतिक समुदायों का आधार न वांशिक है और न धार्मिक। वह देश और एक राष्ट्र में केंद्रित है। उसी को राष्ट्रीय भावना कहते हैं।

संघर्ष में सफल होने के लिए संघ की प्रबल भावना और संघ शक्ति की अनिवार्य आवश्यकता है। यह अत्यंत स्पष्ट है कि जब दो संघ टकराएंगे, तब उसी संघ को सफलता मिलेगी, जिसके अंग मजबूत होंगे। निर्बल संघ एक ही टक्कर से टूट-फूट जाएगा।

जीवन संग्राम में विजयी होने के लिए जहाँ सबसे पहली वस्तु जीवन की प्रबल अभिलाषा है। वहाँ सबसे आवश्यक वस्तु जबरदस्त संघ शक्ति है, जो वर्तमान काल में गहरे राष्ट्रीय भाव और राष्ट्रीय संगठन से पैदा होती है।

शारीरिक बल

जैसे व्यक्ति के जीवित रहने के लिए शरीर की आवश्यकता है, उसी प्रकार राष्ट्र को जीवित रखने के लिए भी शरीर चाहिए। यह फिलासफी तो बिल्कुल सत्य है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अनश्वर, परंतु इस फिलासफी के आधार पर जो लोग शरीर की उपेक्षा का सिद्धांत बना लेते हैं, वे मनुष्य जाति के साथ भयंकर अन्याय करते हैं। शरीर के नश्वर होते भी जीवन उसी दशा को कहते हैं, जब आत्मा का शरीर में निवास हो। शरीर नष्ट होने वाला है। मल-मूत्र का खज़ाना है। व्याधियों का घर है, इत्यादि सब स्थापनाएं हज़ार बार दुहराई जाए, तो भी इस सत्य को दबा नहीं सकती कि आत्मा को सांसारिक अर्थों में जीवित रखने के लिए शरीर की आवश्यकता है। मनुष्य नाम ही शरीरवासी आत्मा का है। ऐसी दशा में शरीर की उपेक्षा करना सिखाते हैं, वे मनुष्य व्यक्ति और मनुष्यजाति दोनों के शत्रु हैं। स्वस्थ आत्मा के निवास के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है और स्वस्थ राष्ट्र की सत्ता को कायम रखने के लिए स्वस्थ और बलिष्ठ राष्ट्रीय शरीर का होना अवश्यम्भावी है।

यह राष्ट्र जीवन संग्राम में कभी नहीं जात सकता, जो शारीरिक दृष्टि से क्षीण हो। जीतना तो एक ओर रहा, उसका जीवित रहना भी कठिन है।

जाओ, और राजपूताना तथा महाराष्ट्र के अद्भुतालयों में पड़ी हुई पुरानी तलवारों और कवचों पर दृष्टि डालो। महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी तथा उनके समय के लोग जिन खड्गों से शत्रु का नाश करते थे, उन्हें उठाकर अपने बल की परीक्षा करो। उन लोहे के कवचों को एक बार शरीर पर पहनने का प्रयत्न करो। एक सपना-सा मालूम होगा। हाथ उन खड्गों को उठाने में असमर्थ मालूम होता है और शरीर उन कवचों के नीचे पिसने लगता है। वे आज़ाद थे और आज़ादी के नाम पर लड़ रहे थे। हम दास हैं और दासता से निकलने की चेष्टा तक नहीं कर सकते।

रोमन साम्राज्य के नाश के कारणों पर प्रकाश डालते हुए इतिहास लेखकों ने यह माना है कि उसका एक बड़ा कारण रोमन लोगों की वह शारीरिक क्षीणता थी, जो साम्राज्य के उपभोग के कारण पैदा हुई थी। उस क्षीणता का दृष्टांत इतिहास के लेखकों ने यही दिया है कि साम्राज्या बनाने वाले रोमन योद्धाओं के कवचों के बोझ को साम्राज्य का उपभोग करने वाले रोमन लोगों के शरीर असह्य समझते थे।

यह भारतवर्ष के दुर्भाग्य है कि यहाँ चरसिय, वैराग्य, झूठे धर्म और अनूठे तत्वज्ञान के कई प्रचारकों ने शरीर के प्रति उपेक्षा भाव उत्पन्न करने की सदियों तक चेष्टा की, और वह अब तक भी जारी है। आज भी भारत वर्ष में सन्तपन और महात्मपन के नम्रिलिखित चिह्न समझे जाते हैं-

शरीर दुबला-पतला हो, कपड़े बेढंगे हों, खाना पुष्टिकारक न होकर साधारण लोगों से अद्भुत हो, तेल, भूसा, घास-फूस कुछ भी हो,परन्तु अन्न, घी, दूध आदि न हो। बाल बढ़े हुए हों, या बिल्कुल न हों। नाखून भी न कटाए जायें। बालों को कभी न धोया जाए, सिर पर मोर पंख बांधे जाए। पैर नंगे हों, सारांश यह कि कुछ अद्भुत चीज हो, जिससे सिद्ध हो सके कि इस व्यक्ति को शरीर का परवाह नहीं है। बस, ऐसा मनुष्य भारत में सन्त-महात्मा और पहुँचा हुआ माना जाने लगेगा। यदि मनुष्य समाज को संचालित करने वाले नियमों पर दृष्टि डाली जाये, तो मालूम होगा कि स्वस्थ और बलवान शरीर के बिना न व्यक्ति का जीवन संभव है और न समाज का। जो धर्म या तत्वज्ञान मनुष्य को शरीर की उपेक्षा करना सिखाता है, वह मनुष्य जाति का घोर शत्रु है। जो राष्टेर शान के साथ जीवित रहना चाहता है, उसे अपनी भावी सन्तती के शारीरिक स्वास्थ्य का व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से पूरा प्रबंध करना चाहिए। कमज़ोर प्राणियों का कोई राष्ट्र जीवन के संघर्ष में खड़ा नहीं रह सकता।

स्वस्थ जीवन, उत्तम भोजन, व्यायाम और सामूहिक संगठनों द्वारा व्यक्ति और समाज के शरीर को बलिष्ठ और सहिष्णु बनाना राष्ट्र का काम है। जो राष्ट्र इस कर्तव्य का पालन नहीं करता वह अपनी आदर सहित स्वाधीन सत्ता को खो देता है।

चरित्र की दृढता

जैसे राष्ट्र के व्यक्तियों का शारीरिक बल संगठित और श्रृंखलाबद्ध होकर राष्ट्र का सारीरिक बल बनता है, उसी प्रकार राष्ट्र के व्यक्तियों का चरित्रबल भीएक लक्ष्य में केंद्रीत और एकीभूत होकर राष्ट्र का चरित्रबल बनता है। यदि कड़ियाँ कमज़ोर होंगी, ता जंजीर कभी मज़बूत नहीं हो सकती। और यदि बहुत मज़बूत कड़ियाँ अलग-अलग पड़ी रही, तो वे किसी काम में नहीं आ सकती, उनमें और पत्थर के टुकड़ों में कोई भेद नहीं रहता। इस कारण जब हम यह कहते हैं कि राष्ट्र से जीवन के लिए चरित्रबल की आवश्यकता है, तो उसमें व्यक्तिगत और सामूहिक चरित्र दोनों का ही समावेश हो जाता है।

यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि चरित्र शब्द से हमारा क्या अभिप्राय है। आचार संबंधी शुद्धता चरित्र का पहला अंग है। पुरुष और स्त्री दोनों निर्दोष निजु जीवन व्यतीत करें, और विषय-वासना की पूर्ति को अपने जीवन का लक्ष्य न बनाए यह चरित्र का बुनियादी रूप है। चरित्र का दूसरा रूप यह है कि राष्ट्र के व्यक्तियों में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम हो, जिसके कारण वह किसी वड़े से वड़े प्रलोभन या भय के असर में आकर भी राष्ट्र के साथ द्रोह न कर सके। विश्वास की सच्चाई, विश्वास के लिए मर-मिटने की भावना, और सम्मान से जीवित रहने की प्रबल इच्छा- यह बल चरित्र के व्यावहारिक रूप है, जिनका निर्माण आचार संवंधी पवित्रता के आधार पर ही हो सकता है।

कभी-कभी क्रियात्मक राजनीति के व्याख्याकार कह दिया करते हैं कि राष्ट्र के व्यक्तियों के निजु चरित्र का राष्ट्र की भलाई-बुराई से कोई संबंध नहीं है। अनुभव ने सिद्ध किया है कि यह विचार ठीक नहीं है। प्रत्येक राजनीतिक आंदोलन अथवा राष्ट्रीय-संघ की सफलता उसके सभी सिपाहियों और विशेषतः उसके नेताओं के चरित्र-बल पर अवलंबित रहती है। अमरीका को इंग्लैंड की दासता से छुड़ाने के जो कारण थे, उनमें उसके सेनापति वाशिंग्टन का निर्दोष और दृढ चरित्र एक प्रमुख कारण था। उस समय के अमरीकन लोग भी प्रायः सत्य और स्वाधीनता-प्रेमी सिपाही होते थे, वह आज-कल के ऐश्वर्य और विलास की सामग्री से सम्पन्न चिकने-चुपड़े अमरीकनों से बहुत भिन्न थे।

स्वतंत्रता-प्रेमी इंग्लैंड में क्रामवैल को राजनीतिक क्रांति के सफल बना देने का जो श्रेय प्राप्त हुआ, उसमें सबसे बड़ा कारण क्रामवैल और उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा, निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल-साम्राज्य को गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था, इसका मुख्य कारण यह था कि जहाँ चिरकालीन वैभव ने मुगलों को चरित्रहीन और कायर बना दिया था, वहाँ सन्तों के प्रचार और शिवाजी के दृष्टांत ने प्रारंभिक मराठा योद्धाओं में सादगी, निर्भयता और दृढता कूट-कूटकर भर दी थी। वर्तमान इतिहास में जिस घटना को सबसे अधिक आश्चर्यजनक समझा जा सकता है, वह केवल बीस वर्ष वारसा की संधि द्वारा पद दलित जर्मनी का पुनरुत्थान है। ढूँढकर देखो, कि असाधारण तीव्र गति से प्राप्त हुए इस नये जीवन का रहस्य क्या है? इतिहासकार बतलाएंगे कि जर्मनी के प्रगति के नेता हिटलर का निर्दोष और दृढ चरित्र ही इस चमत्कार का कारण था।

ये कुछ दृष्टांत हमने इस वात के दिये कि अन्य सब प्रकार के मानवीय भवनों की तरह मनुष्य जाति के राष्ट्रीय भवन भी चरित्र-बल पर की दृढ नींव पर खड़े किये जा सकते हैं। यदि चरित्र-बल की नींव मज़बूत न होगी, तो या तो भवन खड़ा होने से पहले ही गिर जाएगा, और यदि यथा-तथा खड़ा भी हो गया, तो चिरस्थायी न हो सकेगा।

जब हम कुछ दृष्टांत इस सच्चाई को स्पष्ट करने के लिये देंगे कि जिस राजनीतिक आंदोलन की बुनियाद चरित्र-वल पर नहो, वह या तो अ सामयिक गर्भ की तरह बीच में नष्ट हो जाता है, अथवा पैदा होकर शैशव में ही मृत्यु का शिकार हो जाताहै।

फ्रांस की प्रसिद्ध राज्य-क्रांति पूरी तरह सफल क्यों नहीं हुई? उससे देश का कल्याण होने की अपेक्षा अधिक अनिष्ट क्यों हुआ? इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है। फ्रांस की क्रांति को जो नेता मिले थे, उनके चरित्र में दृढता नहीं थी। आचार के संबंध में वह ला परवाह ते और उनके विचारों में दृढता का अभाव था। यही कारण था कि ऊँचे आदर्शों को लेकर प्रारंभ होने पर भी क्रांति को इतने अधिक उतराव-चढाव में से गुज़रना पड़ा। फ्रांस को क्रांति के कारण इतना अधिक गायल होना पड़ा, और अन्त में स्वाधीनता का वह कल्पवृक्ष, जो क्रांति के बीज से पैदा हुआ था, नेपोलियन की तानाशाही के जल प्रवाह में गर्क हो गया।

फ्रांस की राज्य-क्रांति ने जहाँ राजनीतिक बंधनों को तोड़ा, वहाँ फ्रांस के दुर्भाग्य से फ्रेंच लोगों ने आचार-संबंधी बंधनों को भी तोड़ दिया। गंभीरता से विचार किया जाए, तो प्रतीत होता है कि आज तक भी फ्रांस उस समय की चरित्र-संबंधी शिथिलता के दुष्परिणामों से ऊपर नहीं उठ सका। वही आचार-शिथिलता का अभिशाप उसे आज तक भी नीचे ही नीचे घसीटे लिये जा रहा है।

दूसरा दृष्टांत आयरलैण्ड के होम-रूल आंदोलन के इतिहास में मिलता है। इंग्लैंड के विख्यात प्रधानमंत्री मि. ग्लैण्डस्टन ने जिन दिनों पार्लमेंट में आयरलैण्ड के लिये होमरूल का बिल पेश किया था, उन दिनों आयरलैण्ड के राष्ट्रीय नेता चार्लस स्टुअर्ट पार्नल का सितारा बुलंदी पर था। पार्नल बड़ा कुशल खिवैया था। वह बहादुर लड़ाकू भी था। आयरलैण्ड के स्वाधीनता युद्ध में उसने जान डाली थी। जनता की उस समय की प्रधान संस्था लैण्ड-लिंग और उसके गैर-कानूनी घोषित होने पर नैशनल लीग के नेता की हैसियत से होम-रूल आंदोलन का वीरतापूर्ण नेतृत्व मि. पार्नल ने किया था, उसी का परिणाम था कि मि. ग्लैंडस्टन ने आयरलैंड को होम-रूल देने में इंग्लैंड की भलाई समझी। यद्यपि पार्लमेंट में उस समय ग्लैंडस्टन के प्रस्ताव को रद्द कर दिया था, तो भी आयरलैंड की दृढता को देखकर इंग्लैंड के विचारकों का यह मत हो गया था कि आयरलैंड को स्वाधीन शासन का अधिकार देना ही चाहिए। मि. ग्लैंडस्टन और अन्य उदार अंग्रेज़ों के मत-परिवर्तन का सबसे बड़ा श्रेय मि. पार्नल के वीर और सुंदर नेतृत्व को ही दिया जा सकता है। अंग्रोज़ी पार्लमेंट में आयरिश पार्लमेंटरी पार्टी के नेता और बाहर नेशनल लीग के नेता की हैसियत से पार्नल उस समय के आयरलैंड का सवसे अधिक प्रभावशाली अगुवा था और निश्चय था कि होम-रूल बिल के गिर जाने के बाद पार्नल की कमान में आयरलैंड के देशभक्त ज़ोरदार आंदोलन उठाते, तो इंग्लैंड को उसी समय झुक जाना पड़ता परंतु दुर्देव से १८६० में अदालत के सामने एक तलाक की दरखास्त पेश हुई, जिसमें यह बयान किया गया कि पार्नल ने एक श्रीमती ओ-शिया (मिसेज ओशिया) के साथ व्यभिचार किया है।

इस आरोप का उत्तर देने के लिए जब पार्नल को अदालत में बुलाया गया, तो वह हाजिर न हुआ, जिससे संसार को विश्वास हो गया कि पार्नल ने व्यभिचार किया है। नेता के इस जुर्म का आयरलैंड की उस समय की राजनीति पर बड़ा भयंकर असर हुआ। नेशनल पार्टी छिन्न-भिन्न हो गई, आंदोलन बिखर गया और आयरलैंड की स्वाधीनता के विरोधियों की बन आयी। बन आई। यह सर्वसम्मत बात है कि पार्नल की उस चरित्र-संबंधी

संगठन सूत्र के पाठमात्र से संगठन नहीं हो सकता?

-आदित्यमुनि वानप्रस्थ

(गतांक से आगे)

डायनासोरों के बारे में कहा गया है कि ये पृथ्वी पर आज से लगभग साढ़े बाईस करोड़ वर्ष पूर्व के बीच विद्यमान थे। परंतु इन्हें किसी मानव ने नहीं देखा। यदि यह स्थिति है, तो वेदों की अविर्भूति सृष्टि की उत्पत्ति होते ही किनके लिए हुई थी? वेद को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान मानें भी, तो केवल इस रूप में कि यह ज्ञान, वेद-प्रणेताओं, (ऋषियों) को मनीषी प्रायः यह भी स्वीकार करते हैं कि सब प्रकार के विद्वानों को अपनी-अपनी प्रज्ञा ईश्वर द्वारा प्राप्त हुई है। चाहे वह कालीदास और वराह मिहिर हों, अथवा शेक्सपीयर या आइंस्टाइन।

आमने-सामने पुस्तक अपने प्रकार की एक निराली पुस्तक है। धैर्यपूर्वक अध्येतव्य है। सामान्य पं. राव, श्रद्धेया चतुर्वेदा जी तथा आदरणीय आदित्यमुनिजी, ये सभी वर्धापन के पात्र हैं।

एक विद्वान से जब हमने इस विषय में लिखकर पूछा, तो उन्होंने हमें लिखकर उत्तर दिया कि आपके जितने भी वेद के प्रति प्रश्न व शंकाएं हैं, उन सबका उत्तर जो आपको देने वाले थे, ले ऋषि दयानंद, महात्मा नारायण स्वामी और मेरे आचार्य स्व. पं. वीरसेन वेदश्रमी 'वेद विज्ञानाचार्य' अब नहीं रहे। सो जब ऐसा है कि ये सब दिवंगत महानुभाव अब दुबारा हमारे प्रश्नों का समाधान करने के लिए वापस नहीं आने वाले हैं, तो हम अब वेद विषयक अपने निष्कर्षों को ही क्यों न सत्य मान रहे?

दरअसल 'चतुर्वेदविद् : आमने-सामने ग्रंथ के बहाने प्रश्नकर्ता पं. उपेंन्द्र राव और उसके मुख्य सम्पादक की आलोचना में प्रवृत्त आचार्य सत्यजित आर्य अपने लेखों में आचार्या सूर्यदिवी चतुर्वेदा के उत्तरों को उद्धृत नहीं कर रहे हैं कि जिनको दृष्टिगत रखते हुए ही पं. उपेन्द्रराव ने अपनी टिप्पणियाँ की हैं और मैंने सम्पादक के रूप में अपने सम्पादकीय निष्कर्ष अंकित किये हैं। इससे उन्हें विषयान्तर होकर बहकने और हम लोगों पर मनमाने कटाक्ष करने का अवसर मिल जाता है और अपने पत्र के उन हज़ारों अवोध पाठकों को गुमराह करने का भी अवसर भी मिल रहा है, जिनमें से ९९ प्रतिशत पाठकों के पास न तो हमारा ग्रंथ ही है और न आचार्या सूर्यादेवी चतुर्विदा के उत्तरों की पुस्तक ही। इससे भले ही वे अपने अहम की तुष्टि कर लें, पर विद्वानों में प्रतिष्ठित नहीं हो सकते।

मेरा अगला संन्यासाश्रम

मेरा ३ सितम्बर १९३७ को जन्म हुआ था। पुनः ३ मई, १९६३ ई. को २५ वर्ष आठ मास की आयु में विवाह हुआ था। तत्पश्चात ३१ दिसम्बर १९९७ ई. को सेवानिवृत्त होकर अपने वानप्रस्थाश्रम में निवास के उद्देश्य से ग्रामीण अंचल की खेतीहर भूमि में निर्मित 'पुरुषार्थ सदनम' (जिसके भूतल पर एक सत्संग हॉल, एक वाचनालय,और लेखन कक्ष, शयन कक्ष और स्नानागार तथा शौचालय आदि निर्मित हैं) में मैं २९ मार्च १९९८ में प्रवेश कर रहने लगा, जहाँ रहते हुए मैंने अपने पुत्र का २ नवम्बर १९९८ ई. को विवाह कर दिया। और उसे घर का सारा दायित्व सौंपकर २२ नवम्बर १९९८ ईसवी को गुरुकुल होशंगाबाद में पहुँचकर वान प्रस्थाश्रम में प्रवेश किया। तत्पश्चात गुरुकुल होशंगाबाद में ही प्रायः रहने लगा, जहाँ रहते हुए मुझे दिसंबर २००१ में आर्य प्रतिनिधि सभा मद्य प्रदेश व विदर्भ के मासिक मुखपत्र 'आर्यसेवक' का सम्पादक बना दिया गया। फलस्वरूप आगे प्रायः नागपुर में ही रहकर इस पत्र का जून २००५ तक मैंने सम्पादन कार्य किया। आगे जब वहाँ सभा को भंग कर दिए जाने के कारण यह पत्र बंद हो गया, तो पुनः भोपाल आकर मैंने अगले तीन वर्षों तक 'आर्यसमाज प्रहरी' नामक मासिक पत्र का सम्पादन और प्रकाशन कार्य किया। जब यह पत्र कतिपय कारणों से मुझे बन्द कर देना पड़ा, तो अपनी लेखन और प्रकाशन संबंधी रुचियों की पूत्यर्थ एक अनियतकालिक पत्र 'आदित्य प्रकाश' और वेद विषयक कतिपय ग्रंथों का प्रकाशन मैंने अब तक किया है। इस प्रकार मैं अपनी ७५ वर्ष की अवस्था को पार कर अब ७६वें वर्ष में चल रहा हूँ।

इस बीच मैं हृदयाघात और पक्षाघात का दो बार शिकार हो चुका हूँ, जिससे मेरे वायें हाथ की अंगुलियाँ निष्क्रिय हो गई हैं। अब शरीर कहीं अकेले आने-जाने के लायक नहीं रह गया है। इससे मुझे अपने दैनंदिन के क्रिया-कलाप करने में भी बहुत असुविधा होने लगी है। ऐसी स्थिति में मैंने अब संन्यासाश्रम में प्रवेश करने का अपना पूर्व निश्चय स्थगित कर दिया है। अव पुरुषार्थ सदनम में रहते हुए ही मैं अपना शेष जीवन साधना, स्वाध्याय और यथा सामर्थ्य लेखन कार्य करते हुए बिताऊँगा। इस बीच जिन्हें हमारा सत्संग लाभ करना हो, वे मेरे पास आकर अपना कुछ समय व्यतीत कर सकते हैं।

आशा है कि विवरण से उन लोगों को उनके प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा, जिन्होंने फर्रूकाबाद रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में बैठते हुए मुझसे सितम्बर २००७ में पूछा था कि यदि मुझे 'आर्यसमाज प्रहरी' के सम्पादक पद से हटा दिया जाए, तो मैं क्या करूँगा? सो आज न तो 'आर्यसमाज प्रहरी' ही है और न 'आर्य लेखक संघ' ही, परंतु आदित्यमुनि का लेखन और प्रकाशन-कार्य फिर भी निरन्तर जारी है।

मुझे यह भी लालच दिया गया था कि यदि मैं वेद को ईश्वरोक्त मानना और लिकना पुनः प्रारम्भ कर दूँ, तो मेरा समारोह पूर्वक अमृत महोत्सव मनाया जाएगा और मुझे उसमें सम्मानित किया जाएगा। सो मैंने उन्हें कह दिया है कि मैंने यह सत्य सिद्धांत पर्याप्त विचार और चिन्तन के बाद ही अपनाया है।

अतः मैं अपने इस सिद्धांत को छोड़कर अव इस जीवन में पुनः पुराने सिद्धांत पर वापस नहीं लौट सकता। २०-२१ अक्तूबर २०१२ को पं. लक्ष्मीनारायण भार्गव (खण्डवा) के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महासम्मेलन, नई दिल्ली में सम्मिलित होकर मैंने अपने आर्यसामाजिक दायित्वों से भी अब मुक्ति प्राप्त कर ली है।

वीर सावरकर और आर्य समाज

- डॉ. चन्द्रकांत गर्जे

भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के अध्येता, बुद्धिजीवी वीर सावरकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से भली-भाँति परिचित है, पढ़ा-लिखा सामान्य मनुष्य भी उनके कार्यों को जानता है। वीर सावरकर स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत, हिंदू राष्ट्र के एक द्रष्टा, हिंदू राष्ट्रभक्ति के स्फूर्तिस्थान, साहित्यिक, निःस्पृह, स्पष्टवक्ता, असीम त्यागी, जाति-पाति, अस्पृश्यता, सामाजिक अपप्रवृत्ति, रूढियों आदि के विरोधक, समाज क्रांतिकारी, आदि षोडश पहलु - जीवन के योगीराज थे।

मुंवई में वीर सावरकर साहित्य अध्ययन मंडल नाम की एक संस्था है। यह संस्था हर वर्ष त्रि-दिवसीय सम्मेलन का आयोजन करती है। सावरकर की स्मृति में, यह संस्था स्वातंत्र्यवीर-दिवाली विशेषांक भी प्रकाशित करती है। सम्मेलन और पत्रिका के माध्यम से वीर सावरकर के व्यक्तित्व और कृतित्व के हर पहलु पर प्रकाश डालती है। वीर सावकर के विचारों की ओर नव युवकों को आकर्षित कर उनके राष्ट्रभक्ति की ज्योत प्रज्वलित करने का प्रयास यह संस्था करती है। इन पंक्तियों का लेखक भी इस संस्था से जुड़ा हुआ है। सम्मेलनों में सम्मिलित होता रहा है, पत्रिका में वीर सावरकर के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालता रहा है। लेखक इतना करके थका नहीं, उसकी जिज्ञासा बढ़ती गई कि सावरकरजी स्वामी दयानंद तथा आर्य समाज के आंदोलन से परिचित थे या नहीं? अध्ययन की गहराई में पहुँचने के बाद यह ज्ञात हुआ कि वीर सावरकर स्वामी दयानंद तथा उनके लिखे ग्रंथ और उनके कार्यों से परिचित थे। इतना ही नहीं, उन्होंने आर्य समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य भी किया है। इसवी सन १९५७ में दिल्ली में आयोजित '१८५७- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम- शताब्दि महोत्सव' में वे सम्मिलित हुए थे। उन्होंने दयानंद और आर्य समाज के कार्य का स्मरण करते हुए अपने भाषण में कहा था,'स्वामी दयानंद और आर्य समाज के संबंध में मेरी श्रद्धा किसी से छिपी हुई नहीं है। स्वामी दयानंद का 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ पढ़कर मैं संतोष प्राप्त करता हूँ और जिस स्वाधीनता का चिंतन करता हूँ उसमें दयानंद का 'सत्यार्थ प्रकाश'सहायक रहा है। इसलिए मैं स्वामीजी का पक्का शिष्य हूँ। इस समय आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो राजनीतिक स्वार्थों से परे और संदेहों से ऊपर है। इसी में देश के कल्याण की क्षमता है। ***(संदर्भ :** आर्य समाज का इतिहास, सातवाँ भाग, पृ. २७३- २७४. लेखक- सत्यकेतु विद्यालंकार)*.

स्वामी दयानंद के ऐसे पक्के शिष्य- सावरकर का जन्म मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्रजी, योगीराज श्रीकृष्ण और वीर शिवाजी के प्रति अपार श्रद्धा रखने वाले परिवार में नाशिक (महा) से सटे हुए 'भगुर' नामक ग्राम में दिनांक २८ मई १८८३ को हुआ था। इनके जन्म के पश्चात कुछ ही महीनों में दिनांक ३० अक्तूबर १८८३ को स्वामी दयानंद की मृत्यु हुई थी। दयानंद की मृत्यु के समय बालक विनायक दामोदर सावरकर कुछ ही महीनों के थे। सावरकर की प्राथमिक, माध्यमिक उच्च शिक्षा भगुर, नासिक तथा पुणे में हुई। शिक्षा प्राप्तिकाल में सावरकर, दयानंद और आर्य समाज के आंदोलन से परिचित थे। कुछ कहा नहीं जा सकता। एक वास्तविकता को यहाँ स्पष्ट करना आवश्यक सा लगता है, स्वामी दयानंद के जीवन में महाराष्ट्र के जिन-जिन शहरों की चर्चा आती है, उन शहरों में सर्व प्रतम नासिक, उसके पश्चात मुंबई, पुणे, सातारा, वसई-शहर है। नासिक शहर वीर सावरकर की शिक्षा भूमि रही है (एक दृष्टि से बालभूमि थी)। नासिक शहर में स्वामी दयानंद १६ अक्तूबर से १ अक्तूबर १८७४ (चार दिन) तक रहे। उनके वहाँ दो प्रवचन भी हुए। एक गोदावरी नदी के तट पर, दूसरा कालाराम मंदिर में इसवी सन १८७४ से १८९२ तक महाराष्ट्र की यात्रा में दयानंद के विचारों का गहन प्रभाव पड़ा। स्वामी दयानंद ने मुंबई में १० अप्रैल १८७५ को 'आर्य समाज' इस संस्था की स्थापना की थी।

सावरकर का लंदन अध्याय ईसवी सन १९०६ से प्रारंभ होता है। वे अपने शिक्षाकाल में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के केंद्र- भारत भवन (इंडिया हाउस) से समीप से जुड़े हुए थे। उस समय सावरकर- दयानंद के एक शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा के सानिध्य में आए। उस समय स्वामी दयानंद और श्यामजी कृष्ण वर्मा के बीच पत्र-व्यवहार भी हुआ था। स्वामी दयानंद की प्रेरणा के कारण ही श्यामजी कृष्णवर्मा क्रांतिकारी बने। विदेश में रहते हुए, उन्होंने- भारतीय स्वतंत्रता का आंदोलन चलाया था। वीर सावरकर भी इसी आंदोलन से जुड़े रहे। यहाँ सावरकर निश्चित रूप से दयानंद तथा उनके सुदेश, स्वदेश की विचारधारा से परिचित हुए थे। इसवी सन १८५७ के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी दयानंद की भूमिका से भली-भाँति परिचित हुए थे। इसी समय सावरकर ने '१८५७ का स्वतंत्रता संग्राम' ग्रंथ की रचना की थी। यह ग्रंथ- स्वतंत्रता संग्राम की धधकती ज्वाला को अभिव्यक्त करता है और अगली पीढ़ी को प्रेरणा देता रहा है। वीर सावरकर इसवी सन १९०६ से १९११ तक लंदन में रहे। यह उनके प्रारंभिक काल का संघर्ष था, जो आगे भारत के स्वतंत्र होने तक (१९४७) चलता रहा। सावरकर के इस संघर्षकाल की भूमिका में निश्चित रूप से दयानंद तथा उनके शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्माजी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। सावरकर ने अपने ग्रंथ 'तेजस्वी तारे' में श्यामजी कृष्ण वर्मा का बड़े आदर से उल्लेख करते हुए लिखा है, 'मंदिर के शिखर को- कलश को तो सब लोग देखते हैं, परंतु मंदिर की नींव में पड़े हुए पत्थर की ओर किसी ध्यान नहीं जाता है।'

सावरकर के जीवन का दूसरा काल इसवी सन १९११ से १९२९ तक का रहा है। इन १०वर्षों में वे अंग्रेज़ों की सेल्यूलर कारागृह (अंदमान) में दी गई उनके यातनाओं के

(शेष पृष्ठ ११ पर)

रहते हुए भी कारागृह में वे आर्य समाज के एक विधायक कार्य राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार कार्य में जुटे रहे। उनकी अंतिम इच्छा थी कि भारत की सम्पृक्त भाषा के रूप में हिन्दी ही देश की भाषा हो और देवनागरी यह देश की लिपी हो। हिन्दी भाषा में ही देश को एक सूत्र में बांधने की क्षमता है। सावरकर के इस अंदमान अध्याय काल में ही इसवीसन १९१५ में हरिद्वार के कुंभ मेले के अवसर पर आर्यसमाज के कट्टर कार्यक र्ता लाला लजपतराय स्वामी श्रद्धानंद तथा कुछ हिंदुत्व प्रेमी सज्ज्नों के प्रयास से विधिवत हिंदू महासभा की स्थापना हुई और आगे चलकर लाला लजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानंद हिंदू महासभा के सम्मेलनों के अध्यक्षपद पर विराजित थे। (संदर्भ - वीर सावरकर दर्शन लेखक- द.स. हर्ष पृष्ठ ८३) इसवी सन १९९३७ १९४२ तक वीर सावरकर 'हिंदू महासभा' संस्था के अध्यक्ष बने रहे। इन काल के सम्मेलनों में सावरकर के द्वारा दिये भाषणों का ऐतिहासिक महत्व है। उनके भाषण 'हिंदू राष्ट्र दर्शन ग्रंथ रूप में (मराठी, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में) प्रकाशित हुआ। आर्य समाज ने इस ग्रंथ की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। *(संदर्भ : सावरकर दर्शन. ले.द.स. हर्ष पृष्ठ ८१)*

इस लेख के ऊपरी अंश में यह दर्शाया गया है कि दयानंद के वैदिक विचारों से महाराष्ट्र प्रभावित रहा। परिणामतः महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों में आर्य समाज की स्थापना होती रही। मुंबई के अतिरिक्त, विनायक दामोदर सावरकर की जन्मभूमि भगुर के निकट नासिक शहर में पं. वैद्यनाथजी शास्त्री के प्रयास से इसवी सन १९२६ में आर्य समाज की स्थापना हुई। सावरकरजी की जन्मभूमि भगुर में आर्य समाज (१९३४-३५) स्थापित हुआ, जिसका अति संक्षिप्त इतिहास इस तरह का है। भगुर में एक युवक मंडल था। इसमें तुकाराम रहाणे, रामदास रहाणे, राजाराम बेल, कोडे, नरहरि, विठोबा नवयुवक थे। नासिक में (इसवी सन) १९३४-३५) कुंभ मेला आयोजित था। इस कुंभ मेले में भगुर के युवक पहुँचे। उत्तर प्रदेश के एक आर्य साधु इस कुंभ मेले में पधारे थे। उन्होंने स्वतंत्र रूप से वैदिक धर्म तथा दयानंद के वैदिक विचारों का प्रचार कार्य आरंभ किया। आर्य साधु के वैदिक विचारों से भगुर युवक भी प्रभावित हुए और वे उस आर्य साधु को भगुर ले गये। साधु के भगुर में इन युवकों ने आर्य समाज की स्थापना की (१९३४-३५)। अभी हाल में श्री वसेय औरंगाबाद-डॉ. ब्रह्ममुनि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा परली वैजनाथ के सर्वेसर्वा के महत्प्रयासों से भगुर आर्य समाज भवन का जीर्णोद्धार हुआ है। भगुर आर्य समाज नित्यरूप में वैदिक विचारों के प्रचार कार्य में लगा रहा है। जब सावरकर रत्नागिरी से यात्रा पर गये, तब वे दो बार अपनी जन्मभूमि भगुर पहुँचे। वहाँ वे नवयुवकों के निमंत्रण पर आर्यसमाज पहुँचे थे और आर्य समाज के स्वागत और अतिथ्य को स्वीकारा था। (संदर्भ भगुर निवाली नंदनजी रहाणे, आर्य समाज के मंत्री संतोष रहाणे, नासिक आर्य समाज के मंत्री गुलशन चड्ढा, श्रीमती लोचन शास्त्री से साक्षात्कार व चर्चा)

वीर सावरकर के रत्नागिरी अध्याय (इसवी सन १९२९ से १९३७) में ही अबुल रसीद एक इस्लाम पंथीय पागल ने स्वामी श्रद्धानंद की हत्या दिनांक २३ दिसंबर १९२६ में की थी। अबुल रसीद के किये हुए घृणित कार्य के कारण उसे फाँसी देने की बात आयी, तो महात्मा गांधी ने उसके फाँसी का विरोध किया था। महात्मा गाँधी ने मुसलमान संतुष्टीकरण की नीति चलाई थी। सावरकर ने महात्मा गाँधी का बड़ा विरोध करते श्रद्धानंद की शोक सभा में कहा था- स्वामी श्रद्धानंद की हत्या मेरे भाग्य में हो सकती है। स्वामीजी की हत्या बड़ी दुखदायी घटना है, पर इससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। उनका शुद्धिकरण का कार्य कभी थमेगा नहीं। इतना कहकर वे रुके नहीं, श्रद्धानंद के नाम से 'श्रद्धानंद' साप्ताहिक पत्रिका उन्होंने प्रकाशित करना प्रारंभ किया। श्रद्धानंद के प्रथम अंक में ही उन्होंने एक लेख श्रद्धानंद की हत्या और गांधी की अल्पसंख्यक मुसलमान संतुष्टीकरण की नीति प्रकाशित किया। *(संदर्भ - सावरकर दर्शन ले.द.स. हर्ष पृष्ठ ६५)*

ईसवी सन १९४३ में सिन्ध प्रांत में मुस्लिम लीग पक्ष की सरकार थी। मुस्लिम लीग ने स्वामी दयानंद की अमर क्रृति 'सत्यार्थ प्रकाश' पढर प्रतिबन्ध घोषित किया था। उस समय सावरकर मुस्लिम लीग के विरोध में विरोध में खड़े हुए और प्रतिवन्ध का विरोध करते रहे। स्वामी दयानंद तथा सत्यार्थ पर नितांत श्रद्धा रखने वाले थे वीर सावरकर।

समूचा अखंड भारत स्वतंत्र हो और भारत देश की सभी रियासतें भारत देश में शामिल हो, यह सावकर की इच्छा थी। भारत के मध्य के हैदराबाद में निजाम मीर उस्मान अली खाँ की रियासत थी। इस रियासत में ईसवी सन १८९२ में आर्य समाज की स्थापना हुई थी। समूची रियासत में देखते ही देखते आर्य समाज संस्था की अनेक शाखाएं खुली थी और वैदिक प्रचार कार्य बड़े धूम-धाम से होता रहा। १९३७, १९३८ ये दो वर्ष आर्य समाज की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसी समय निजाम ने आर्य समाज की हर गतिविधि पर प्रतिबंध लगा दिये थे। आर्य समाज ने अहिंसा-मार्ग स्वीकारते हुए निजाम की नीति का विरोध किया। दि. २५, २६, २७ दिसंबर १९३८ को आर्य समाज ने नारायण स्वामी (दिल्ली), स्वामी स्वतंत्रतानंद के नेतृत्व में सोलापुर में आर्य महासम्मेलन को आयोजित किया था। सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री पी.बी. अणे और वीर सावरकर एक प्रमुख अतिथि के रूप में इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। उस समय स्टेट काँग्रेस भी इस सत्याग्रह में जुटी थी। बाद में स्टेट काँग्रेस को पीछे हटना पड़ा। वह महात्मा गांधी के आदेशानुसार सत्याग्रह से पीछे हटने के लिए मजबूर हुई थी। महात्मा गाँधी का भय इस बात का था कि इस घोषित सत्याग्रह के कारण जाति-जाति में दंगा फैलेगा, खून-खराबा होगा। गाँधीजी का भय निराधार था। अल्पसंख्यक संतुष्टीकरण की राजनीति यह मुख्य कारण था। सम्मेलन के कार्यकर्ता भी भ्रमावस्था में रहे कि सत्याग्रह कोई चलाए या नहीं? गाँधीजी की राजनीति को सावरकर ने ठीक तरह से पहचाना था। उन्होंने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्यजनों को पूछा कि आर्य समाज के गुरु कौन हैं? स्वामी दयानंद या महात्मा गाँधी? प्रथम इस प्रश्न का उत्तर ढूँढें, तो सत्याग्रह को सही दिशा मिल सकेगी।

(पृष्ठ ४ का शेष)

करने को कहा था। स्वामीजी ने करुणाभाव से तत्काल मोदक मँगाए और उन वालकों में वाँटकर कहा तुम्हारा अध्यापक संभव है तुम्हें लड्डू न भी दें, इसलिए मैं ही दिये देता हूँ। फिर स्वामीजी ने उन नासमझ बच्चों को छुड़ा दिया।

मैंने महाराजा रणजीत सिंह की जीवनी में पढ़ा था कि एक बच्चे ने आम के पेड़ से आम तोड़ने के लिए पत्थर पेंका। संयोगवश वह पत्थर आम को न लगकर आम को न लगकर महाराजा रणजीत सिंह कहीं जाकर आ रहे थे, उनके माथे पर जा लगा। बच्चा भय के मारे रोने लगा। परंतु महाराजा ने कहा, बच्चा रोओ मत, इसमें तुम्हारा क्या दोप है? तुमने तो आम तोड़ने के लिए पत्थर आम के पेड़ पर मारा था। पर वह पत्थर वहाँ न लगकर मेरे माथे में लग गया। कोई वात नहीं, इस प्रकार कहकर उन्होंने बच्चे का रोना तो वंद करवाया ही, ऊपर में लड्डू भी दिये। इसलिए स्वामीजी क्षमा के महादानी हुए।

जानलेवा हत्यारे को जीवनदान दिया। यह घटना तो सर्वविदित है कि स्वामीजी उदयपुर से शहापुर, आजमेर व पाली होते हुए मिती ज्येष्ठ वदी ८ सं २०४० तदनुसार सन १८८३ को जोधपुर पहुँचे। यहाँ स्वामीजी का महाराजा यशवन्त सिंहजी ने भव्य स्वागत किया। कुछ दिनों बाद की घटना है कि महाराजा के पास स्वामी दयानन्दजी ने नन्हीं जान वैश्या को वैठा देख लिया। स्वामीजी ने कहा केसरी की कन्दरा में ऐसी कल्मष, कलुषित,कुक्कुरी के आगमन का क्या काम? यह सुनकर नन्ही जान आग बबूला हो गई और स्वामीजी को मारने का षडयंत्र रचने लगी। उसने जगन्नाथ रसोइया, जो स्वामीजी को खिलाता-पिलाता था, उसको पटाने का निश्चय किया। जगन्नाथ को कुछ लोभ देकर अपने वश में करके उसे दूध में ज़हर के साथ काँच पीसकर स्वामीजी को पिलाने के लिए कहा। जगन्नाथ वैसे तो स्वामीजी का अच्छा भक्त था, पर लोभ में आकर वह यह दुष्कर्म को करने के लिए उद्यत हो गया। स्वामीजी को गहरी नींद आ रही थी। इसलिए विना कुछ विचारे, उन्होंने दूध तो जगन्नाथ के हाथ से लेकर पी लिया। परंतु तुरंत उन्हें ज्ञात हो गया कि दूध में ज़हर मिलाया हुआ था। स्वामीजी ने सेवकों से जगन्नाथ को बुलाया और कहा- 'हे जगन्नाथ। तूने यह क्या किया? स्वामीजी के भाव देखकर जगन्नाथ समझ गया, उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली। पर उसने स्वामीजी जैसे महान परोपकारी,उदार,-सहृदय, प्रकाण्ड वेदों का विद्वान, वाल-ब्रह्मचारी के प्राण लेकर मानव मात्र का जो कल्याण किया है, इस जुल्म के लिए वह सदा के लिए कलंकति बना रहेगा। फिर स्वामीजी ने उसे ५०० रुपए देकर कहा, हे जगन्नाथतुमने काम तो बहुत बुरा किया है, मुझे अभी बहुत काम करना वाकी था। पर जो हुआ, अच्छा ही हुआ। ईश्वर को यही मंजूर था, इसमें तुम्हारा क्या दोष है? पर अब तुम जोधपुर की सीमा से रातों-रात निकलकर नेपाल चले जाओ, नहीं तो महाराजा तुम्हें मारे बिना नहीं छोड़ेगा। इस प्रकार स्वामीजी ने जगन्नाथ के प्राण वचाकर संसार में एक अद्भुत उदाहरण पेश करके क्षमा के दानी ही नहीं, महादानी कहला गये।

(पृष्ठ ११का शेष)

सावरकर ने अपनी वात वढ़ाते हुए कहा- हिंदू महासभा भी इस सत्याग्रह में सम्मिलित होगी। मैं आर्य समाज का सदस्य नहीं हूँ, पर हिंदू अवश्य हूँ। हिंदू आर्य ही होता है। मैं आर्य ही हूँ। आर्य समाज और हिंदू सभा दोनों कंधे से कंधा मिलाकर आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। आर्य समाज के दस हज़ार सत्याग्रही और हिंदू सभा के पाँच हज़ार सत्याग्रही कुल १७ जत्थों में सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। अंत में निज़ाम को आर्य सत्याग्रह के सम्मुख झुकना पड़ा। आर्यजनों की सभी माँगें स्वीकृत हुई। यह आर्य समाज की विजय थी ही, सावरकरजी का योगदान भी महत्व का था। (संदर्भ : सावकर दर्शन ले.द.स. हर्प पृष्ठ २१, पुनः राजकारण पृष्ठ ८५) दयानंद का राष्ट्रवाद और वीर सावरकर हिंदुत्ववाद में काफी समानता है। दयानंद राष्ट्रवाद समूचे भारत की स्वतंत्रता, स्वधर्म में सुदेश स्वशासन का था, तो वीर सावरकर का हिंदुत्ववाद राष्ट्र निष्ठा अखंड भारत की थी, यह एक गंभीर विषय है। कोई अध्येता इस विषय की गहराई में पहुँचे, तो एक नया अध्याय सामने आएगा।

'हम पुत्र हैं भारत माता के,
चरणों में शीश नवाओ।
माथे पर हो तू हो चंदन,
छाती पर तू हो माला।।
जिव्हा पर गीत तू ही,
मैं तेरे गीत गाऊँ।
भक्ति मेरी तेरे चरणों में चढ़ाऊँ।

- वीर सावरकर

दयानंद विद्या मंदिर, नारायणपेट में समावर्तन कार्यक्रम आयोजित

दयानंद विद्या मंदिर नारायणपेट में दिनांक १७ मार्च २०१३ को दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों के **विदाई समारोह** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के प्रारंभ में सामूहिक यज्ञ किया गया। यज्ञोपरांत **समावर्तन समारोह** में मुख्य अतिथि अशोक कुमार श्रीवास्तव कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा आं. प्र., राम रेड्डी एवं वीरूपाक्षप्पा उपस्थित हुए। अध्यक्षता प्रधानाध्यापक कृष्ण भगवान ने की। मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धांतों का महत्व बताते हुए फर्ज़, मर्ज़, कर्ज़ और अर्ज़ की व्याख्या समझा कर परिवार, समाज, प्रांत एवं राष्ट्र की सेवा में तत्पर रहने का आह्वान किया।

उक्त कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने देशभक्ति के गीतों पर नृत्य व योगासन का प्रदर्शन किया। अंत में विद्यार्थियों को उनके जीवन में सात्विक एवं संस्कारी आचरण अपनाते हुए धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी तथा प्रतिज्ञा भी कराई गई।

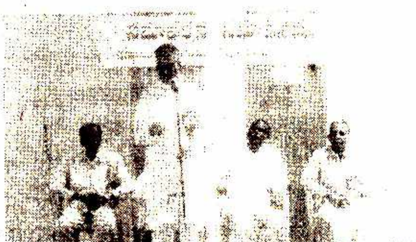

नारायणपेट के दयानंद विद्या मंदिर में विद्यार्थियों को यज्ञोपरांत आशीर्वाद देकर प्रतिज्ञा करवाते हुए सभा कोषाध्यक्ष अशोक कुमार श्रीवास्तव जी।

సాధనాద్భుత శక్తి !

...సంగమేస్వర్ 'సంగమ్'

ఆ॥వె॥ స్వప్న మేదిమైన సార్థక మగుటకు
సతత సాదనమును సలుప వలెను
అడుగు లిడక ముందు అందునా గమ్యము ?
సంగమన్న మాట చద్ది మూట

విస్మయమును గొలుపు విజ్ఞాన విజయాల
వెనుక దాగి వుంది ఘన తరముగ
సతత సాధనమ్ము సలిపిన చరితమ్ము !
"సంగమన్న మాట . . . ."

విషము తినిన గాని నశియింపకుండగా
అమృతముగ మారి ఆదు కొనును !
అహరహమ్ము జేయు అల వాటు సాధన!!
"సంగమన్న మాట . . . ."

రాత్రి పగలు గనని "రత్నాకరుడు" దొంగ -
తనము' దిట్ట "నారదామునీంద్రు -
భోధ" "సాధనము" న "పూజ్య వాత్మీకమ్మె"
"సంగమన్న మాట . . . ."

జ్ఞానమెంత ఘనము గాను ప్రాప్తించినా
సాధనమ్ము లేక సఫల మవదు
సింహమైన వేట చేయక తప్పునా ?
"సంగమన్న మాట . . . ."

జనన మరణ బంధ చక్రము లోనుండి
ముక్తి బడయు దివ్య శక్తి గూడ
యోగ సాధనమున బాగుగా గలుగురా !
"సంగమన్న మాట . . . ."

సతము సలుపు చుండు "సాధానాద్భుత శక్తి -
మహిమ" చాట తరము మహిని గాదు
సాధనమున జిక్కు "సర్వేశు సన్నిధి !!"
శంగమన్న మాట చదిద మూట.

'दिव्य दिया सत्यार्थ प्रकाश'

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

जीवन कितना ऋषि का उज्जवल,
है चरित्र गंगा सा निर्मल,
कीर्ति विकीर्ण दिशाओं में जो -
रजत चांदनी सदृश धवल,
प्रभा-प्रभण्डित कर्म तुहम्हारे -
बसुन्धरा पर हैं छविमान ।
सोया राष्ट्र जगाने वाले,
वेद छाजा लहराने वाले,
सत्य सनातन धर्म वेद का
भू को फिर दिखलाने वाले,
पतितों का उद्धार किया -
स्थिर को किया पुनः गतिमान ।
संमस्तों को साहस देकर,
मनुष्यता को निर्मय कर,
जाग्रत किया जगत का सार,
वेदों का विद्या लेकर,
गहन अविद्या अन्धकार से -
ग्रसित, किया भू ज्योतिर्मान ।
अनुपमेय का वह व्यक्तित्व,
दिव्य समग्र रहा कृर्तत्व,
बड़े-बड़े विद्वान पराजित -
हुए तुम्हारा सुन बक्तृत्व,
मानव की सम्पूर्ण प्रगति हित,
किया अलौकिक अनुसंधान ।
दिव्य दिया 'सत्यार्थ - प्रकाश,
जाग्रत हुई जन मन आश,
तूफानों से टकराए तुम -
हुए नहीं तुम तनिक निराश,
आर्य समाज किया स्थापित -
जिससे हो जग का कल्याण ॥

आर्य जीवन पाक्षिक पत्र का
स्वामित्व सम्बन्धी विवरण
फार्म ४ नियम ८
(प्रेस और रजिस्ट्रेशन एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश महर्षि दयानन्दमार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
प्रकाशन का समय को	: प्रति मास १२ एवं २७ तारीख
मुद्रक का नाम	: आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश घर नं.४-२-१५, महर्षि दयानन्द मार्ग सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
सम्पादक	: विट्ठलराव
राष्ट्रीयता	: भारतीय
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है	: आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश
भागीदार हिस्सेदार	: आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

मैं विट्ठलराव सुपुत्र गोविन्द राव इस पत्र के द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण जहाँ तक मेरा ज्ञान हैं वास्तव में सत्य है।

विट्ठलराव, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश,
महर्षि दयानन्दमार्ग,सुल्तान बाज़ार,हैदराबाद

వాతావరణం విషవాయువులను హరించడానికి వేదం చూరిన మార్గం

తెలుగు అనువాదం : చలవాది సోమయ్య

1984 డిశంబరు 2-3 తేది రాత్రి 1-30 గం.కు యస్.యల్. కుష్‌వాహ్ (వయస్సు 45) అనే ఒక ఉపాధ్యాయుడు తన భార్య త్రివేణి (వయస్సు 36) కుక కుంటూ ఉంటే విని వేల్కొన్నాడు. కొంచెంసేపట్లో అతడు, అతని పిల్లలు కూడ దగ్గడం మొదలుపెట్టారు. గుండెలోనొప్పి, కండ్లమండడం, ఊపిరాడకపోవడం కూడ వారికి జరిగింది. వారింటికి బయట చూస్తే అనేక మంది ప్రాణాభయంతో పరుగెతడం కూడ వారు చూశారు. పరుగెత్తేవారలో ఒకరు సుమారు మైలు దూరంలో ఉన్న యూనియన్ కార్బైడ్ ఫ్యాక్టరీలో విషరాయువు లీక్‌అయిందని కూష్‌వాహతో చెప్పాడు. జనసమూహంతో కిలిసి వారు కూడ వరుగెత్తడానికి నిశ్చయించు కున్నారు. కాని భార్య త్రివేణి సలహాయిచ్చింది. "మనం అగ్నిహోత్రం ఎందుకు ముదలు పెట్టకూడదు ?" అని వారు అలాగే అగ్నిహోత్రం చేశారు. 20 నిమిషాల్లో ఆవిషవాయువు (MIC gas) లక్షణాలు వారి నుండి దూరమైనాయి.

యమ్.యల్. రాథోర్ (వయస్సు 33) తన భార్య, నలుగురు పిల్లలు, తల్లి, సోదరినితో భోపాల్ రైత్వస్టేషన్ దగ్గ నివసిస్తున్నాడు. అకుకడ విషవాయువు ప్రభావానికిలోనై డజన్ల కొద్ది మనుషులు చనిపోయారు. అయిదేండ్ల క్రితం ప్రారంభించి చేస్తున్న అగ్నిహోత్రాన్ని రాథోర్ ప్రారంభించి 'త్రయంబకం' మంత్రంలో హోయం చేశాడు.

భోపాల్‌లోని విషవాయువు ప్రభావానికిలోనై అగ్నిహోత్రం ద్వారా రక్షించబడిన వారిని గూర్చి ఇవిరెండు ఉదాహరణలు. ఎంతమంది భోపాల్‌లో అగ్నిహోత్రంచేసి రక్షించబడి ప్రయోజనం పొందారో తెలిసి కోడానికి ప్రయత్నాలు జరుగుతున్నాయి.

అగ్నిహోత్రం అనేది వైదిక హోమానికి అత్యల్ప రూప యజ్ఞ ప్రిక్రియ (Sacrifice) మాత్రమే. ప్రకృతిలోని జీవపరిణామాలపై (bio rhythms of nature) ఆధారపడిందే ఈ యజ్ఞాగ్ని (Sacrificial fire).

అమెరికా దేశపు మనస్తత్వ శాస్త్రజ్ఞుడు చేనిరత్నర్‌పూనె యూనివర్సిటీలో అగ్నిహోత్రం మిద పరిశోధన చేస్తూ ఇలా అన్నాడు "అగ్నిహోత్రం వాతావరణంలో కొన్నిప్రత్యేకమైన మార్పులు తెస్తుంది. అలాగే మానవ మనస్సుపై కూడ చికిత్సకు సంబంధించి నిర్దిష్టమైన ప్రభావం చూపుతుంది. చికిత్సకు సంబంధించిన వైద్యవి ధానం ప్రత్యేకంగా ఆయుశ్వేదంలో నిర్దేశించబడింది.

అనేకమంది ఇప్పుడు అంగీకర&ంచేదేమంటే భోపాల్ సంఘటనప్రస్తుతం మొదటిది. ముందు ముందు సులభంగా అనేకమార్లు ఈసంఘట జరుగుతాయి. వాతావరణ కాలుష్యం ఇప్పుడెంత శక్తివంతంగా మారి దంటే అది త్వరత్వరగా భూవాతావరణాన్నే మార్చి తిరిగి దానిని బాగు చేయలేని స్థాయికి తీసుకువస్తున్నది.

ఈ వాతావరణ కాలుష్యం మనస్సును, పృథివిని, మన శరీరాలను కులుషితం చేస్తుంది కనుక దాని ప్రభవం ఎంత ఉందో తెలిసి కోడానికి 13 ఏండాల పాటు ప్రతి భూఖండం మీదప్రాదనిక అధ్యయనం చేయడం దరిగింది. దీని కొకపరిష్కారం కూడ సూచించబడింది. ఈ కాలుష్యాన్ని భూమండలం అంతటా ఎదుల్కోవారి. ఈ సమస్య భోపాల్‌లోని యూనియన్ కార్బైడ్ ప్లాంట్‌కు అంతటా ఎదుల్కోవాలి. ఈ సమస్య భోపాల్‌నోని యూనియన్ కార్బైడ్ ప్లాంట్‌కు మాతీరతనే పరినితం కాదు. అసుల సమస్య భూమండలం అంతటా అదివేగంగా క్షీణించుతున్న వాతావరణానికి సంబంధించింది అని రత్నర్ అన్నారు.

ప్రస్తుతం మనం ఎదుర్కొంటున్న పరిస్థితులకు పరిష్కార మార్గం ఈ పృధివిపై అతి ప్రాచీనకాలం నుండి వస్తున్నవేద విజ్ఞానంలో చూపబడింది. వేదాల్లో ఒకచోట "మహా నగరాల వినాశనాన్ని గురించి ప్రాయబడింది. వాతావరణ కాలుష్యం వల్ల మహానగరాలు యే సింతతిలో నశిస్తాయో సంక్షేపంగా అక్కడ వర్ణించబడింది. మనలో కొందరు ఈ వర్ణనలన్నీ యాథార్థాలు కావని అవి సైన్సుకు సంభంధించిన కట్టు కథలు (Science) క్రింద ముద్రవేయడానికి అకర్షితువైనారో వారిపుడు పునరాలోచనలో పడుతున్నారు. అంతెందుకు పదేళ్ల క్రింతం ఎవరైనా పూర్వ (తూర్పు) పశ్చిమ యూరపులోని దాదాపు సగం అరణ్యాలు నాశనమయ్యాయనో (dead) లేదా నాశనమవుతున్నాయనో చెబితే అతడు వెట్టివాడనిముద్రవేసి ఉండేవారు. మన వర్ష పునిటిని ప్రయోగశాలలకు పంపి దానిలోని ఆమ్లశాతం (acid content) వల్లిమనము, నదీజాలాలు, ఈపృధివి సురక్షితంగా ఉంటాయా లేదా అని పరిశీలించవలసి రోజు వస్తుందని, అప్పటి వరకు మనం జీవించి ఉంటాయామని ఎవరైనా ఊహించారా ?

ఈ సమస్యను సంక్షిప్తంగా చెబితే మన జీవన విధానానికి సంభంధించిందే ఈ ప్రశ్న అంటారు రత్నర్. అతని అభిప్రాయంలో మనం సరియైన సమయంలోనే సామూహికంగాను, వ్యక్తిగత జీవన విధానంలోను గంభీర మయిన దృష్టిని వ్యక్తపరుస్తున్నామని మనం ప్రకృతి నియమాలకు అనుకూలంగా ఎంతవరకు జీవిస్తున్నామనేది కూడ యిక్కడ చూడ వలసి ఉంటుంది. "మనం ప్రకృతిలో ఉన్నాం కనుక మనజీవన విధానం కూడ ప్రకృతి అనుకూలంగానే ఉండాలి" అంటాడాయన.

బహుశ అనేక స్థాయిలో భోపాల్‌ను దృష్టిలో ఉంటుకొన వలసి ఉంటుంది అంటారు రత్నర్. ఒకటి వ్యక్తిగతస్థాయి. "నేను నున్న, నా కుటుంబాన్ని ఎలారకించుకోవాలి ?" రెండవతి సాధారణమైంది, విశాల దృష్టితో చూడవలసింది. "ప్రభుత్వాలు తమ తీరపజలను రక్షించుకోవడానికి ఏమి చెయ్యాలి ?" అనేది.

ఇంతవరకు అగ్నిహోత్రం అనేక విజయాలను సాధించిందని

ఆయనంటాడు. ఈనాడు భూమిపై మాట్లాడే భాషలన్నింటిలో అగ్నిహోత్రం చేయనివారంటూ లేరని కూ అయనంటాడు.

ప్రత్యేకంగా నాలుగు దేశాల్లో అసాధారణంగా అగ్నిహోత్రం వ్యాపించింది. ఆ దేశాలు అమెరికా చిలి పోలెండ్, పశ్చిమజర్మనీ. అమెరికాలో "నవయుగం" ఉద్యయం ప్రారంభమైన నాటినుండి (sixties) అగ్నిహోత్రాన్ని నిర్వహించేవారు ఎక్కడచట్టినా ఉన్నారు. ముఖ్యంగా తూర్పు పశ్చిమ కనుమల్లో అత్యధికులున్నారు ఇంకా అమెరికా గర్వంగా చెప్పుకోదగిన యథార్థమేమంటే సెప్టెంబరు 9, 1978 నుండి ఎడతెగకుండా 24 గంటలు 61/2 సం॥ల నుండి అగ్నిహోత్రం నిరంతరంగా సాగుతున్నది తమ దేసంలోనే అని ఈస్థలం ''అగ్నిహోత్ర ప్రెస్‌ఫారం'' అని పిలువబడుతున్నది. ఇది బాల్టిమెర్ నేరీలాండీలో ఉంది వాషింగ్‌టన్ డి.సి.లో ఉన్న వైట్‌హౌస్‌కిది అరగంట ప్రయాణంలోనే ఉంది.

డి.సి. కి నైబుతిగా 11/2 గం॥ ప్రయాణం చేస్తే మొట్టమొదటి స్థాపించబడిన అగ్నిదే వాలయం ఉండి ప్రదేశానికి చేరతాము. అది వర్జీనియాలోని మాడిసన్‌లో శుద్ధ పరచేవైది కాగ్నిని పునరుద్ధంచడానికి ఏర్పడింది. వర్జినియా రాష్ట్రంలోని ప్రాచీన పర్వత ప్రాంతంలో ఒకప్పుడు అమెఅకాలో అత్యల్ప కాలుష్యంగాల ప్రదేశంగా పిలువబడిచోట అది నిర్మంపబడింది. పాశ్చాత్య దేశాలో అగ్నిహోత్రం ప్రవేశపెట్టబడిన తరువాత కొద్ది కాలానికీ సెప్టెంబరు 11, 1973 అది ప్రారంభించబడింది. ఇక్కడి నుండే పృధివిపై నలువైపుల అదివ్యాపించింది. అగ్ని దేవాలిలయం కేవలం ఒక గది మాతీరతమే అక్కడ అగ్నిహోత్రం ప్రతిరోజు సూర్యడు ఉదయించినపుడు, సూర్యాస్తమయానికి ముందు నిశ్శబ్దంగా నిర్వహించబడుతుంది. అకుకడ వేరే పూజలంటూ ఏమీ వేవు. అగ్నిహోత్రంలో పలగాని బయట గాని ఎక్కడైనా చేయ వచ్చును. అయినపుపటికి నిశ్శబ్దంగా ఒకగదిలో చేసినపుడు దాని ప్రభావం అధికంగా ఉంటుంది.

చిలీలోని అండెస్ పర్వ్త ప్రాంతంలో ఒక ప్రత్యేకమయిన అగ్ని దేవాలయం ఏర్పడింది. వేల కొద్ది చికిత్సలు అక్కడ జరిగాయి. జబ్బుపడిన, గాయపడిన పశువులు కూడ స్వాభివికంగా (instinctively) అక్కడికి వచ్చి వాటికి నయమయ్యే వరకు అక్కడ ఉంటాయి. ఇటీవల హతమార్చే మంచుతుపాను (killer snow-storm) ఆప్రాంతంలో వచ్చింది. అయితే అగ్నిహోత్రం చేసే కుటుంబాల నదిఏమీ చేయవేదు. భోపాల్‌లో అగ్నిహోత్రం చేసినవారు యూనియన్ కార్బైడ్ ప్రమాదంలో డిశంబర 1984న ఎలా రక్షించబడాలిదరో అలాగే వారు కూడ రక్షించబడారు.

పోలెండ్‌లో శాస్త్రవేత్తల సంఘం హోమ చికిత్సను ముందుకు తీసికొని వెళ్ళింది. దేశవ్యాప్తంగా 17 చోట్ల ఈ హోమ కేంద్రాలు ఏర్పడాయి. అగ్నిహోత్రం వెనిటనే ప్రారంభించాలని కోరుతున్నారో వారు రేపటి సమావేశానికి (meeting) రావాలని ఒక ప్రకటన చేయగానే 200కు పైగా శాస్త్రజ్ఞులు అక్కడికి హాజరయినారు.

అమెరికా తరువాత విస్తృతంగా అగ్నిహోతీరతాన్ని ఆచరిస్తున్న రెండవ దేశం పశ్చిమ జర్మనీ అగ్నిహోత్రపు భస్మంతో చికిత్సచేసే విధానాన్ని అది ఇపుపటివరకు కొనసాగి న్నూనేఉన్నది. డజన కొద్ది చర్మవ్యాధులు ఈ భస్మ ప్రభారానికిలోనవుతున్నట్లు ప్రాథమిక పరీక్షలలో తేపింది. ఈ ప్రాంతం మరొక కారణం వల్ల కూడ ఒక ప్రత్యేకతను సంతరించుకున్నది. దీన్ని 'వాల్డ్ స్టెర్‌బన్' (wald sterben) లేక చనిపోతున్న అరణ్యాలు (forest death) అనవచ్చు. త్వరత్వరగా అంతరించి పోతున్న కృష్ణారణ్య ప్రాంతాలో (black forest areas) అగ్నిహోత్రము, హోమముల ప్రభావం చినిపోతున్నచెట్ల మీద ఎలా ఉంటుందో మూడి నేలల పాటు 1984 శిశిరబుతువు (చెట్ల అకులు రాలే బుతువు) లో ప్రయోగం చేశారు. 1985 మధ్యలోగాని ఈ ప్రయోగాల ఫలితాలు విశదం కావు.

"వ్యవసాయంపై హోమచికిత్స'' (Homa Therapy Farming) అనే గ్రంథం ప్రచురించబడిన తరువాత ఈ ప్రయోగం జర్మనీలో చేశారు. అగ్నిహోత్రయూని వర్సిటీ ద్రాషింగ్‌టన్ డి.సి. అమెరికా) విడుదల చేసిన కొన్న ప్రకటనలలో రాగితో చేసిన పిరమిడ్ అగ్ని కుండపు అగ్ని చికిత్స ఎంతవిలువైనదో తద్వారా మొక్కల చీడపీడలు, మానవులే వ్యాధులు ఎలా కుదర్చవచ్చునో వివరాలు యివ్వబడినాయి. అనేక దేశాల్లోని ప్రజలు ఎప్పుడైతే ఈ అగ్నిహోత్రం హోమం ద్వారా నూటికి 800 శాతం ఎంట ఎక్కువగా దిగుబడి చేయుడం గమనిచారో కొన్న ఆంక్షలు విధించడం మొదలైంది.

అగ్నిహోత్రానికి కావలసిన ద్రవ్యాలు కొన్నే. దాన్ని చేయడం కూడ సులభమే. పిరమిడ్ ఆ కారంలో ఉన్నరాగికుండం ఒకటు. అది 6"X6"x3" సైజులో వీంటుంది. గోమయంతో చేసిన ఎండినపిడక. శుద్ధమైననెయ్యి. కొంచెంబియ్యపుగింజిలు. బియ్యంలో ఉండే రాసాయనిక విలువలను బట్టిదాన్ని ఎంచుకోవడం జరిగింది. ఆవుపేడలో క్రిమీ సంహారకగుణాలున్నాయి శాస్త్రీయంగా ఋజువు చేయబడింజి. శుద్ధమైన నేతిలో ప్రత్యేకమైన గుణాలున్నాయి గముక దాని పలితం బాగుంటుంది. రాగిలో ప్రత్యేకమైన గుణాలున్నాయని అనాది కాలంగా గుర్తించడం జరిగింది. కేరళలో విందు భోజనాల్లో బియ్యపు అన్నం పెద్దపెద్ద రాగి పాత్రల్లోనేవండుతారు. రాగి పాత్రల్లో ఉంచిన నీళ్ళలో కొన్ని ప్రత్యేక గుణాలు ఉత్పన్నవౌతాయి. నూర్యోదయ నూర్యన్తమయ నమయాలు చాలా ముఖ్యమైనవి. సూర్యోదయ సమయంలో అనేక అగ్నులు విద్యుత్తు, ఈథర్, అనేక సూక్ష్మశక్తులు సూర్యని నుండి విడుదల అయి భూమివరకు వచ్చి ఎక్కడ సూర్యోదయం అవుతుందని చెప్పబడుతుంథో అక్కడ సమతుల్యంగా వరద ఉధృతి (flood effect) ని కలిగిస్తాయి. సూర్యాస్తమయంలో ఆ వరద ఉధృతి వెనుదిరుగుతుంది.

ప్రపంచంలో అతి విస్తృత స్థాయిలో అగ్నిహోత్రం మొదటగా నిర్వహించిన ప్రదేశం భోపాల్. అరవయిల్లో మిస్టర్ యమ్.జి. పోతేదార్ ఆపని ప్రారంభంచి 15 సంవత్సరాల పాటు తన జీవితాంతం ఆచరించాడు.

...see on page 15

సద్గురువు-ఉత్తమ శిష్యుడు

మాతృమాన్ పితృమాన్ ఆచార్యవాన్ పురుషోవేద.... శతపథ బ్రాహ్మణము (14-6-10-2)

భావము :- బాల బారికలకు మానవులకు ప్రథమగురువు మాత-తల్లి, ద్వితీయ గరువు పిత-తండ్రి, తృతీయ గురువు ఆచార్యుడు. ధార్మిక విద్వాంసులును వేద సత్యములను ఉపదేశించు. వారును అయిన తల్లిదండ్రుల సంతానము ఉత్తములు విద్వాంసులు భాగ్యవంతులు ధన్యులు అగుదురు. ఆచార్యుడును వేద విదుడు వేద ధర్మబోధకుడు అయి ఉండవలెను.

తద్విజ్ఞానార్థం సగురు మే వాభిగచ్ఛేత్
సమిత్ పాణి: శ్రోతీరతియం బ్రహ్మనిష్ఠమ్ । . . . .
ముండకోపనిషత్తు (2-12)

భావము :- శిష్యుడు-విద్యార్థి వేద విజ్ఞానమును నేర్చుకొనుట కొఱకు శ్రోత్రియుడు బ్రహ్మనిష్ఠుడయిన సద్గురువును ఆశ్రయించవలెను. పూర్వకాలమున గురు కులములందు నిత్యము దేవయద్ఞములను చేసెడి వారు. గురువు వద్దకు వెళ్ళు నపుడు రిక్తహస్తములతో వెళ్ళగూడదు. కనుక పాలు పండ్లను, దేవయజ్ఞమును ఉపయోగపడు సమిధలను శిష్యుడు విద్యార్థి గురుకులమునకు తీసుకొని వెళ్ళి వినయ విధేయతలతో గురువునకు సమర్పించవలెను.

శ్రోత్రియుడనగా వేదవిదుడు. గురువు వేదములను సాంగోపాంగముగా ఆధ్యయనము చేసినవాడయి, శిష్యులకు వాటిని అర్థ సహితముగా క్షుణ్ణముగా బోధింవగలిగి యుండాలి. బ్రహ్మయందు నిష్ఠగలవాడై యుండాలి. అనగా అష్టాంగ యోగమును ఆచరించి, సమాధి స్థితియందు పరమేశ్వరాను భూతిని పొందినవాడుగా ఉండాలి.

సర్వే వేదవిద: శూరా: సర్వేలోకహితరతా:

భావము :- చతుర్వేదములను సర్వ ఆర్ష గ్రంథములను సాంగోపాంగముగా అర్థ సహితముగ పూర&శ్రీముగా ఎరిగిన వాడు, తన శిష్యులకు యథాతథముగా వక్రీకరించకుండ బోధించువాడు, నిత్యము యోగాసనాది వ్యాయామములను చేయుచూ శూరుడు బలిష్ఠుడుగా నున్నవాడు, లోకమునకు-సకులమానవులకు హితము-మేలు చేయుటయందు నిమగ్నుడయినవాడు వేదవిదుడు అగును.

జీవాత్మ పరమాత్మ ప్రకృతి ఈ మూడు తత్వములు-పదార్థములు అనాది నిత్యములు పరమాత్ముడు ఒక్కడు నిరాకారుడు సర్వజ్ఞుడు నిత్య ముక్తుడు. గురువు ఆ బ్రహ్మము యొక్క స్తుతీ ప్రార్థనాదులను, పంచమహా యద్ఞములను, నిష్కామముగా సత్కర్మలను, యమనియమాది యోగాంగములను నిత్యము వేదోక్తముగా ఆచరించువాడుగా ఉండాలి. గురువు కనీసము ఆర్య గ్రంథములను అనుసరించిమైనను వేద సత్యములను శిష్యులుకు చక్కగా బోధించగలిగినవాడయి ఉండాలి.

ఆచినోత్ ధర్మన్ ఇతి ఆచార్య:

భావము :- వేద ధర్మములను సిద్ధాంతములను ఆచరించుచూ, తన శిష్యుల చేత ఆచరింప చేయువాడు ఆచార్యుడు-సద్గురువు.

ఆచారం గ్రాహయతి ఇతి ఆచార్య:

భావము :- మానవాళికి కీడుచేయని, శుభము చేకూర్చు వైదిక ఆచారములను శిష్యులకు బోధించువాడు, ఆ సదాచారములను తాను ఆచరించుచూ, తన శిష్యుల చేతను మానవులందరి చేతను ఆచరింపజేయువాడు, ఇలా తీర్చి దిద్దుతూ తన శిష్యులను మానవ సమాజమును ఉన్నతముగా నొనర్చువాడు ఆచార్యుడు సద్గురువు.

విద్యావినయ సంపన్నే బ్రాహ్మణే గవి హస్తిని శుని చైవ శ్వపాకే చ పణ్డితా: సమదర్శిన:

భావము :- విద్యావినయ సంపన్నుడగు బ్రాహ్మణునియందు గోవునందు ఏనుగు నందు, కుక్కను వండుకొని తిను ఛండాలునియందు సమదృష్టి గలవాడు అనగా ఎల్లరిని సమముగా ఆదరించువాడు, సర్వప్రాణులయందు నిరాకార భగవంతుడు సమానముగా ఉన్నాడని ఎఎచువాడు సద్గురువు-ఆచార్యుడు.

యాన్యన వద్యాని కర్మాణి తాని సేవితవ్యానినో ఇతరాణి . . .

తైత్తీరియోపనిషత్తు శిక్షావల్లి (11)

భావము :- అనిందితములైన విహితధర్మ కర్మలను మాత్రము ఆచరింపుము మాయందరి అన్యవేద నిషిద్ధ అధర్మ కర్మలను త్యజింపుము.

యాన్యస్మాకగ్ం నుచరితాని తాని త్వయపాస్యాని . . . తై త్తీరియోపనిషత్తు శిక్షావల్లి (11)

భావము :- మా ఆచరణలయందలి సత్ప్రవర్తనలను-మంచి నడవడికలను సత్ కర్మలను నీవు అనుసరింపుము.

ఇలా ఉత్తమముగా ఉపదేశించు సద్గురువులను, ఆచార్యులను, శిష్యులు, విద్యార్థులు ఆశ్రయించవలెను.

యదార్థ దర్శనమ్ జ్ఞానమ్

భావము :- ఈశ్వరుడు జీవులు ప్రకృతి, ఈ త్రిత్వముల, ఈ మూడు పదార్థముల గుణములను-లక్షణములను యదార్థముగా దర్శించుట-తెలిసికోనుట జాఞనము సత్యవిద్యయగును.

కణస్య కణస్యేవ విద్యాప్రవర్థతే

భావము :- అణువు అణువుగా-కొంచెము కొంచెముగా విద్యవృద్ధియగును. కావున గురువు శిష్యుని శక్తి సామర్థ్యములను గుర్తించి, కొంచెము కొంచెముగా వేదాది విద్యలను బోధించవలెను. గురువు శిష్యులకు విద్యలను ఉపదేశించు నడువు, అతని వాణిమధురముగాను కోమలముగాను ఉండలయును. పరుషముగా కఠినముగా క్రోధముగా నుండరాదు.

ఇంతటు మహానముపైన గురువులకు సద్బ్రాహ్మణులకు వెండి బంగారము ధన వస్త్రాది దానములను, వారి ఆశ్రమముల నిర్వహణకు, శిష్యగణముల పోషణకు గృహస్థులు రాజులు చక్రవర్తులు దేశపరిపాలకులు యధా శక్తి ఆర్థిక సహాయము చేయవలెను.

విషావ్యమృతం గ్రాహ్యం, బాలాదపి సుభాషితమ్

అమిత్రాదపి సద్వృత్తి మమేధ్యాదపి కొంచనమ్ । . . . మనుస్మృతి (2-2-39)

భావము :- అమృతమును విషమునుండి మైనను, సుభాషితమును-మంచి మాటలను బాలునినుండి మైనను, ఉత్తమ వ్యవహారమును శత్రువునుండి మైనను, బంగారమును అపవిత్ర వస్తువునుండి మలినములనుండి మైననుగ్రహింపవలెను.

ఉత్తమ శిష్యుని లక్షణములు :-

శిష్యుడు-విద్యార్థి గురువులయెడ గౌరవమును వినయవిధేయతలను కలిగియుండవలెను. వేదైధ్యయనమునందు తదితర విద్యల సముపార్జనయందు జిజ్ఞాసతోను శ్రద్ధాభక్తులతోను

కృషి చేయవలెను. అన్య చింతనలను విలాసములను మద్యపానాది సప్తవ్యసనములను అసూయాది దోషములను త్యజం చవలెను. గురుకుల నిర్వహణకుగురువులకు అవశ్యమైన సేవా శుశ్రూషలను నిత్యము శ్రద్ధాభక్తులతో చేయవలెను. నిరాడంబరముగాను క్రమ శిక్షణ తోనుమెలగవలెను. అహింస సత్యాది యమములను, సౌచసంతోషాది నియమములను, ప్రధానముగా బ్రహ్మచర్యమును పాటించవలెను. చల్లని నీటితో శిర: స్నానమును చేయవలెను.

శ్రవణమ్ మననమ్ నిధిధ్యాసనమ్ అథసాక్షాత్కారమ్ ఇతి శ్రవణ చతుష్టయమ్

భావము :- శ్రవణముమననము నిధిధ్యాసనము సాక్షాత్రము - ఈనాల్గింటిని శ్రవణము చతుష్టయ మందురు.

శ్రవణము :- గురువు ఉపదేశించునపుడు శిష్యుడు-విద్యార్థి శ్రద్ధతోను ఏకాగ్రతతోను వినవలెను.

మననము :- విననవిద్యలను వివేచనతో ఆలోచించవలెను. సంభంధిత గ్రంధములను స్వాధ్యయము చేయవలెను. గురువును సందేహములు అడిగి తెలుసు కొనవలెను.

నిధి ధ్యాసనము :- శ్రవణము మననముల వలన కలిగిన జానమును కంఠస్థము చేయవలెను. ధ్యానయోగము ద్వారా చిత్తమునందు స్థిరపంచు కొనవలెను.

సాక్షాత్కారము :- పదార్థము-తత్త్వము యొక్క గుణ కర్మ స్వభావములను లక్షణములను ధ్యానము నందు అనుబవమునకు తెచ్చుకొనవలెను. సాక్షాత్కారము చేసుకొనవలెను.

విద్యర్థులు శ్రవణ మననాదులలో సమర్థులు కావలెను. తనకన్న విద్యలో అధికులైన తోటి విద్యార్థులయెడ అసూయాది దోషములు లేని వారుగ ఉండాలి.

విద్యావ హై బ్రాహ్మణ మాజగామ
గోపాయ మా శేవధిష్టే హమస్మి
అసూయకొయాన్నజవే2యతాయ
నమా బ్రూయా వీర్యవతీ తథా స్యామ్। సారుక్తము (2-1-4)

భావము :- అసూయ గలవానికి, బుజుత్వము (ఐశిబిజీరివీనీశి తీళిజీగిబిజీఖిదీలిరీరీ) లేని వానికి, యతికాని వానికి నన్ను చెప్పకుము. ఇట్టి దోషములు లేని, సత్య భాషణాది మంచి గుణములుగల విద్యార్థికి చెప్పిననేను బలవతి నగుదునని విద్యాదేవత బ్రహ్మ విద్య నెరిగిన బ్రాహ్మణునితో ఆలంకారికముగా చెప్పవీకొన్నది. అనగా సద్గురువులు వేదములను సద్విద్యలను ఉత్తమ విద్యార్థులకు బోధించిన సార్థకమగునని భావము.

ఈశ్వరుని జ్ఞానమైన వేదములకు సృష్టి క్రమమునకు ప్రత్యక్షాది ప్రమాణములకు అనుకూలమైన విద్యలు సత్యములు. శిష్యుడు వాటిని చదువవలెను. గురువు చదివించవలెను. ప్రతికూలమైనవి అసత్యములు ఉ॥ తల్లి దండ్రుల (శుక్రశోణితముల) సంయోగములేకమే సంతానము కిలగెను. ఇది సృష్టి క్రమమునకు విరుద్ధము. కనుక అసత్యము. ఇట్టి అసత్యములను అసత్య విద్యలను త్యజించవలెను. అసత్య విద్యలను చెప్పు గురువులను త్యజించవలెను.

- చుండూరు శ్రీహరిరావు

श्री गोपाल जी एवं सुदर्शन जी को मातृशोक

मरिकल आर्य समाज के सदस्य एवं अध्यापक श्री सुदर्शनजी की माता का हाल ही में वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया। वह पिछले कुछ महीनों से अस्वस्थ थीं। सभा के पदाधिकारियों और सदस्यों की उपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान विट्ठलराव आर्य तथा नगर के सभी गणमान्य व्यक्ति तथा आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश की ओर से हैदराबाद के राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समाज की ओर से परमात्मा से उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने और उनके शोकाकुल परिवार सदस्यों को सदमें से उभरने का संबल प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

...from page 13

1972లో మిస్టరె వసంత పరాంజపీ దీన్ని వాషింగ్టన్ డి.సి.కి తీసుకు వెళ్ళి అప్రతిహతంగా ప్రయాణించుతూ అప్పటినుండి ప్రపంచంలోని ప్రతిఖండంలో వ్యాపింపజేస్తున్నాడు. ది ఇంటరె నేషనల్ హోమా థెరపిరిసెర్చి ఇన్‌స్టిట్యూట్‌తో సంబంధం కలిగిన ఆయన, మరియు బారి రత్నర్ మహారాష్ట్రలోని అకల్ కోట్‌కు చెందినవారు. ఈ ఇన్‌స్టిట్యూట్ మాతీరతమే యజ్ఞచికిత్స (Homa Therapy) ప్రపంచంలో అతి ప్రాచీన విజ్ఞానమైన జీవ-శక్తి (bio energy) జీవ ఉత్పత్తి శాస్త్రము (bio genertics) వైద్యసాస్త్రము (medicine) వ్యవసాయము (farming) మరియు వాతావరణానికి సంభంధించిన సాంకేతిక విద్య (weather engineering) లపై వేదాల్లో యివ్వబడిన సమాచార్న్నవీ సరించి ఆయా విషయాల పరిజ్ఞానాన్ని (subjects) ఇస్తున్నది.

జిమ్మి కార్టర్ (అమెరికా అధ్యక్షుడు) పరిశోధన సంస్థ నొకదానిని స్థాపించాడు. ఆ సంసథ "2000 సంవత్సరం" అనే రిపోర్ట్‌ను ముద్రించింది. అందులో వాతావరణ కాలుష్యం వల్లి ప్రపంచం ఎలా ధ్వంసమౌతుందో, అందువల్లి కలిగే బాధలేమిటో - నీటి కొరతమొదలు అస్తవ్యస్తమయ్యే వాతావరణ (Green house effect) (కార్బన్‌డైఆక్సై మెథిన్ వాయువులు అధికంగా భూవాతావరణానికి దిగువభాగంలో చేరి వాతావరణం అస్తవ్యస్థమౌతుంది - అను వాదకుడు) వరకు వర్ణించడం జరిగింది. ఇంకా 15 ఎండ్లకు కదా 21వ శథాబ్దం వచ్చేది అనే ఆలోచనతో ఆరిపోర్‌టను ప్రక్కన బెట్టడం జరిగిందని బారీ రత్నర్ అన్నాడు. ప్రపంచవినాశం (Armageddon) ఇప్పుడే జరగదు గదా అని విషయాన్ని ప్రక్కనబెట్టడం ప్రమాదకరమైంది, శక్తినివృథా చేసికోవడమౌతుంది. భోపాల్ సంఘటన వివత్తు ఎంత చేరువలో ఉందో ఎంతప్రమాదకరామైందో తెలుపుతున్నది. అగ్నిహోత్రం-హోమచికిత్స విషవాయువు (Gas chamber) నుండి బయటపడేందుకు ఒకమార్గం చూపుతున్నది.

ऋषि बोधोत्सव आयोजित

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश के तत्वावधान में दि १० मार्च २०१३ रविवार सायं ५.०० बजे पं. नरेंद्र भवन में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया।

यज्ञ ब्रह्मा पं. धर्मपालजी शास्त्री (मेरठ) व पं. प्रियदत्त शास्त्रीजी के पौराहित्य में बृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात पं प्रियदत्तजी शास्त्री व धर्मवीरजी (लालागुड़ा) द्वारा भजन प्रस्तुत किये गये।

पर्व संदेश में पं धर्मपालजी शास्त्री ने महर्षि के जन्म से लेकर गुरु विरजानन्दजी के सानिध्य में विद्या हासिल करने तक के एक-एक प्रसंग पर व्यापक प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती वैचारिक क्रांति के प्रणेता थे।

पं धर्मपालजी ने जीवनभर पाखंड, अन्धविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों का घोर विरोध कर चारों वेदों का निचोड़ अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। जिसका अध्ययन कर उनके पश्चात धुरंधर शास्त्रार्थ महारथियों, विद्वानों, महात्माओं, की सेना तैयार हुई। वर्तमान परिस्थितियों में महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए सभी को आगे आकर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का कार्य करना चाहिए।

डॉ. टी. वी. नारायण ने अपने विचार व्यक्त करते हुए महर्षि के आदर्शों को अपनाकर अपना जीवन सफल बनाने की अपील की।

सभा मंत्री वेंकट रघुरामुलु ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

उक्त कार्यक्रम का संचालन ठाकुर लक्ष्मण सिंह सभा उप-प्रधान ने किया।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी व सदस्य तथा नगरद्वय के सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी व सदस्य उपस्थित थे।

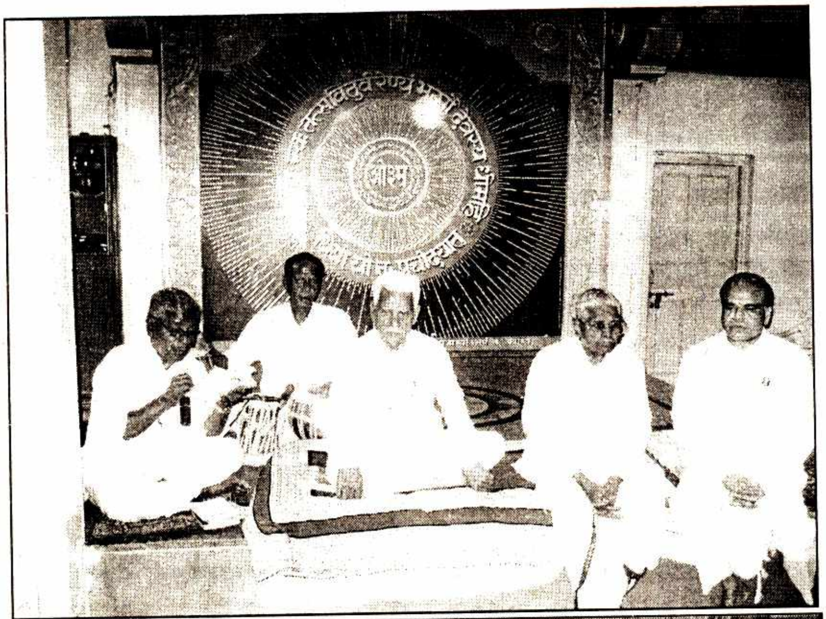

हैदराबाद के राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में आयोजित ऋषि बोधोत्सव में उपस्थित सभा मंत्री वेंकट रघुरामलू, एवं अन्य. दूसरे चित्र में हवन का दृश्य तथा अंतिम चित्र में उपस्थित आर्यजन।

चेंगीचर्ला में आर्यसमाज का नवनिर्मित भवन उद्घाटित

रंगारेड्डी जिले के चेंगीचर्ला में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन गत १० मार्च के किया गया, जिसमें सभा के मंत्री वेंकट रघुरामुलु ने समाज के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्रीधर आचार्य के ब्रह्मत्व में वृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात आर्यसमाज, सीताफल मंडी के प्रधान दशरथजी आर्य ने ध्वजारोहण किया। आचार्य सविता व गुरुकुल की छात्राओं ने भजन प्रस्तु किए। समारोह की अध्यक्षता वेंकट रघुरामुलु ने की। आचार्य ज्योतिश्रीजी, रावीकंटी कृष्णमूर्ति, श्रीधर आचार्य, सभा के कोषाध्यक्ष अशोक कुमार श्रीवास्तव ने समारोह में भारी संख्या में उपस्थित नगरद्वय के आर्यसमाजों के पदाधिकारियों व सदस्यों को संबोधित किया और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान देते हुए स्वामी दयानंद के द्वारा प्रतिपादित मान्यताओं व नियमों का पालन करने का आहवान किया। विशेष तौर पर सभी उपस्थित जनों, पं. गणेश आर्य द्वारा आर्य समाज की स्थापना की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

चेंगीचर्ला में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर समाज के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन करते हुए सभा के मंत्री वेंकट रघुरामुलु। साथ में कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव। दूसरे चित्र में उपस्थित लोग एवं गुरुकुल के विद्यार्थी।

स्व. दुड़ेम लक्ष्मन्ना जी को श्रद्धांजली

आर्य समाज, नारायण पेट के भूतपूर्व मंत्री श्री दुड़ेम लक्ष्मन्ना जी का गत १९ मार्च को देहावसान हो गया। वे ८९ वर्ष के थे। दुड़ेम लक्ष्मन्ना जी बचपन से ही आर्य समाज से जुड़े हुए थे। वे एक कर्मठ, सत्यनिष्ठ और जुझारू कार्यकर्ता थे। वे आर्य समाज के किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए तत्पर रहते थे। उनके निधन से तेलंगाना प्रांत के आर्य जगत् ने एक कर्मठ कार्यकर्ता खो दिया, जिससे समाज को अपूर्णीय क्षति पहुँची है। उनका अंतिम संस्कार २० मार्च को दोपहर २.१५ बजे वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान विठ्ठलराव आर्य तथा नगर के सभी गणमान्य व्यक्ति तथा आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे। आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश की ओर से हैदराबाद के राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

- सभा

डॉ. मुरलीधर राव को मातृ शोक

आर्य समाज, महबूबनगर के गौरव अध्यक्ष डॉ. मुरलीधरराव की माता श्रीमती लक्ष्मम्माजी का गत ९ मार्च को निधन हुआ। वे १०३ वर्ष की थीं। उनकी अंत्येष्टि उसी दिन वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। उनकी स्मृति में १० मार्च को आर्य समाज, महबूबनगर में शोक सभा का आयोजन कर शोक संवेदना प्रकट की गई। इस सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश के प्रधान विठ्ठलराव आर्य तथा डॉ. सी.एच. चंद्रय्या ने सोक संदेश में दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की ईश्वर प्रर्थना की। आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश की ओर से हैदराबाद के राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्थापित : 4-4-31 ई.
पंजीकृत सं. 6-52 फ. तदुपरांत 1342 / 84

ओ३म्

दूरभाष : 24558707, 24753827, 66758707

आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश

महर्षि दयानंद मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद- ५०००९५ (आं.प्र.)

Lr. No. Lr. No. 403708/ 2013

दि. २८-०३-२०१३

संस्थापक : आर्य समाज

विशेष सूचना

सेवा में,
श्रीमान प्रधान / मंत्रीजी
आर्य समाज ---------------- . नमस्ते ।
मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा की आध्र प्रदेश के अधिकारियों की विशेष बैठक दिनांक २७-०३-२०१३ के दिन सभा प्रधान विट्ठलरावजी की अध्यक्षता में नरेंद्र भवन में हुई। बैठक में सभा के चुनाव से पूर्व सभा की नियमावली (संविधान) में कुछेक संशोधन करना अनिवार्य समझा गया, जो समाजों के हित में तथा सार्वदेशिक सभा की नियमावली (संविधान) के अनुसार हो। अतः सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि सभा के संविधान में संशोधन हेतु दिनांक २८ अप्रैल २०१३ रविवार के दिन पं. नरेंद्र भवन में अंतरंग तथा साधारण सभा की विशेष बैठकों का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। अतः दिनांक २८ अप्रैल २०१३ की बैठकों को ध्यान में रखते हुए आर्य समाजों से लिये जाने वाले प्रतिनिधि आवेदन पत्रों की तिथि को ३० अप्रैल २०१३ से बढ़ाकर ३१ मई २०१३ कर दी गई है। अतः समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने समाजों के चुनावों को इससे पहले सम्पन्न करवा लें। प्रतिनिधि आवेदन पत्रों को २८ अप्रैल २०१३ की साधारण सभा में लिये गये निर्णयों के अनुसार २८ अप्रैल २०१३ के बाद से स्वीकृत किये जाएंगे। अतः प्रतिनिधि आवेदन पत्रों के साथ में संलग्न किये जाने वाले सारे दस्तावेज तथा संबंधित शुल्क आदि की जानकारी साधारण सभा के दिन ही दी जाएगी। अतः समाजों से संबंधित प्रधान व मंत्री तथा संबंधित समाजों के प्रतिनिधि अवश्य साधारण सभा में उपस्थित रहें। विधिवत सूचना-पत्र भी इस पत्र के साथ संलग्न है।

सूचनार्थ व आवश्यक कार्यवाही के लिए । **धन्यवाद ।**

भवदीय

वेंकट रघुरामुलु
सभा मंत्री

विट्ठलराव आर्य
सभा प्रधान

ఆర్య సమాజ్ అధికారులకు ప్రత్యేక సూచన.

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. ఎన్నికల సందర్భంలో, ప్రతినిధి సభ నియమావళి లోని కొన్ని అంశాలలో సంశోధనము చేయవలసిన అవసరమున్నది. ఈ మార్పులు సార్వదేశిక సభ నియమావళికి అనుకూలముగా ఉండేటట్లు చూడవలసిన అవసరము కూడ ఉన్నది. కావున సభ యొక్క సర్వసభ్య సమావేశము 28.4.2013 ఆదివారము నాడు దీని నిమిత్తమై ఏర్పాటు చేయబడినది. సమస్త (ఆర్య సమాజ్, మంత్రి, ప్రధాన్, ప్రతినిధులు) అందరు ఆ రోజు తప్పక హాజరు కాగలరని కోరుచున్నాము. ప్రతినిధులకు సంబంధించిన అన్ని వివరాలు కూడ సర్వ-సభ్య సమావేశము లో తీసుకోబడు నిర్ణయములను అనుసరించి తేదీయు చేయబడును మరియు ప్రతినిధి ఫారాలు ఆ తరువాత 31-5-2013 వరకు తీసుకొనబడును.

తేది 28.3.2013.

— విఠల్ రావ్ ఆర్య
ప్రధాన్. సభ.

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 27-03-2013 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15
మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707,
Fax:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री

प्रो. कैलाशनाथ सिंह यादव नहीं रहे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के भूतपूर्व मंत्री प्रो. कैलाशनाथ सिंह का गत ९ मार्च को उनके आवास 'महोदरी' में निधन हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। उनकी स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश की ओर से हैदराबाद के राज मोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रो. कैलाशनाथ सिंह जनता पार्टी की सरकार में १९७८ में शिक्षा मंत्री बने। तत्पश्चात भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह से निकटता के कारण १९८९ में जनता दल के टिकट पर चंदौली से सांसद बने तथा १९९१ में थानापुर क्षेत्र से विधायक चुनकर बधिनसभा में विपक्ष के नेता बने रहे। वे अपने राजनीतिक जीवन के साथ-साथ समान रूप से आर्य समाज में सक्रीय तौर पर कार्यरत रहे।

कैलाशनाथ सिंह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री भी रहे। अंतिम समय तक वे आर्य समाज के प्रसार-प्रसार के लिए पूरी तन्मयता से प्रयासरत रहे। पं. नरेंद्र भवन, राज मोहल्ला में स्व. प्रो. कैलाशनाथ की स्मृति में श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। इसमें सभा के सभी पदाधिकारियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्य समाज उत्तर लालागुड़ा में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन

उत्तर लालागुडा में २५ कुण्डीय महायज्ञ

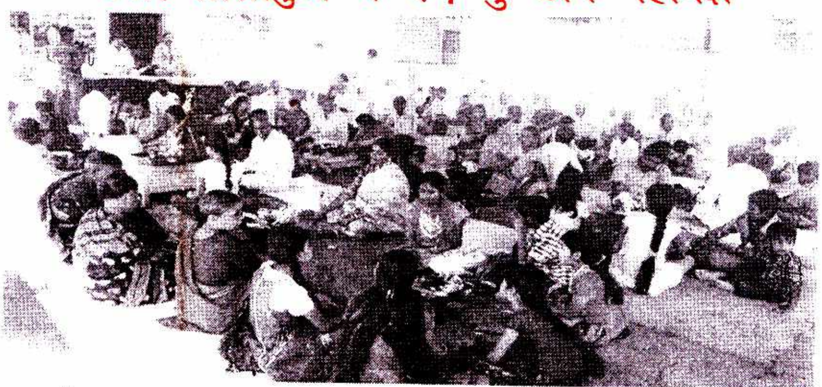

आर्य समाज,उत्तर लालागुड़ा में ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीधराचार्यजी के ब्रह्मत्व में आयोजित २५ कुण्डीय महायज्ञ में हवन करते हुए समाज के सदस्य।

महबूबनगर में हिन्दी कवि सम्मेलन सम्पन्न

हिन्दी प्रचार समिति, महबूबनगर एवं आंध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी, हैदराबाद के तत्वावधान में स्थानीय डॉ. बी.आर. अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय, अध्ययन केंद्र, हिन्दी विभाग के सहयोग से एम.वी.एस. सरकारी डिग्री कॉलेज, महबूबनगर (आंप्र) में गत ३ मार्च को भव्य हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया।

समिति के अध्यक्ष डॉ. सी.एच. चंद्रय्याजी की अध्यक्षता में आयोजित इस सम्मेलन का शुभारंभ आं.प्र. हिन्दी अकादमी के अनुसंधान अधिकारी प्रो. बी. सत्यनारायण ने किया।

मेलन में हैदराबाद से पधारे कवि नरेंद्र राय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, भँवरलाल उपाध्याय, प्रो. बी. सत्यनारायण आदि ने भाग लिया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

संपादक: श्री विठ्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से
कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.सु.बाज़ार,हैदराबाद